और ताज्जुबकी बात तो यह थी कि ऑपरेशन पूरा होने तक सरदारने उफ् तक नहीं किया ! सर्जन और उसके मददगार डॉक्टर यह देखकर अचंभेमें आ गये और बोल उठे : "ऐसा बीमार तो हमें जीवनमें पहली ही बार मिला है !"

३

आग्रह, दृढ़ता, हंसते-हंसते बड़ेसे बड़ा दुःख सहनेकी अपार शक्ति तथा संपूर्ण निर्भयता — महान योद्धाके ये सब गुण सरदारमें चरम सीमाको पहुंचे हुए थे । यह उस विरासतका ही परिणाम था, जो उन्हें अपने पिताके संयमी और आग्रही जीवनसे मिली थी ।

सरदारको स्वच्छता और सुघड़ताकी आदत भी माता-पितासे ही विरासतमें मिली थी । वे सिर्फ व्यक्तिगत स्वच्छताका ही आग्रह नहीं रखते थे, परन्तु आसपासकी चीजें, घरका आंगन, घरके सामनेके रास्तेका कोना-कोना सभी कुछ साफ-स्वच्छ रखनेका आग्रह रखते थे । उनकी सुघड़ताका जीता-जागता उदाहरण तो बारडोलीका आश्रम ही है । उनकी प्रेमपूर्ण देखरेखके नीचे फला-फूला आश्रमका सरदार-बाग सरदारश्रीकी सौन्दर्य-दृष्टिका स्पष्ट दर्शन हमें कराता है ।

४

सरदारने अपनी मैट्रिक तककी शिक्षा करमसद, पेटलाद, नड़ियाद और बड़ौदा जैसे अलग अलग स्थानोंमें

१९३० का नमक-सत्याग्रह वगैरा महत्त्वके अवसरों पर सरदारश्रीकी प्रतिभा चमक उठी । खेड़ा-सत्याग्रहके समय स्वयं गांधीजीने सरदारकी शक्तियोंको पहचान लिया था और एक आम सभामें मानों सरदारको प्रमाण-पत्र देते हुए उन्होंने कहा था :

"सेनापतिकी होशियारी अपना व्यवस्थापक-मंडल चुननेमें है । बहुत लोग मेरी सलाह माननेको तैयार थे । लेकिन मैंने सोचा कि उप-सेनापति कौन होगा ? और मेरी नजर वल्लभभाई पर गई । मुझे यह स्वीकार करना चाहिये कि वल्लभभाईसे पहली बार मेरी भेंट हुई तब मुझे ऐसा लगा था कि यह अकड़बाज आदमी कौन है ? यह क्या काम करेगा ? लेकिन जैसे जैसे मैं उनके अधिक संपर्कमें आता गया, वैसे वैसे मुझे लगता गया कि वल्लभभाई तो मेरे साथ होने ही चाहिये । वल्लभभाईने भी माना : 'मेरी वकालत खूब चल रही है, म्युनिसिपैलिटीमे भी मै बड़े महत्त्वका काम कर रहा हूं । लेकिन उन दोनोंसे ज्यादा बड़ा काम देशका है । वकालत आज चलती है, कल बंद भी हो जाय । पैसा आज है, कल भाग जाय; संभव है वारिस उसे उड़ा दें । इसलिए पैसेसे ज्यादा ऊंची विरासत मैं बच्चोंके लिए छोड़ जाऊंगा ।' ऐसे अनेक विचार करके वे सत्याग्रहमें कूद पड़े । अगर वल्लभभाई मुझे न मिले होते, तो जो काम हुआ है वह हो ही नहीं सकता था ।"

इस तरह सरदारश्री देशकी आजादीके आन्दोलनमें तथा अन्य सार्वजनिक कार्योंमें महात्माजीके साथ लगभग

पूरी की थी । अपने विद्याभ्यासका समय सरदारने कैसी गरीवी और सादगीमें विताया था, इसका एक उदाहरण हम यहां देखें ।

जव वे नड़ियादमें अपने ननिहालमें रहते थे, तव कभी कभी अपने घर करमसद जाते थे । उस समय उनकी दादी उन्हें नड़ियाद तक लौटाने आती थी । नड़ियादसे आणंद तक रेल चलती थी, लेकिन करमसद जानेके लिए वे कभी रेलमें नही वैठते थे । घरसे नड़ियादके लिए रवाना होते तव उन्हें रास्तेमें खानेकी कोई चीज खरीदने लिए दो-चार आने दिये जाते थे । लेकिन ये पैसे सरदार रेलभाड़ेमें न खर्च कर डाले, इसी खयालसे दादी नड़ियाद तक उन्हें छोड़ जाती थी ।

मैट्रिक तकके शिक्षाकालमें वल्लभभाई वड़े ऊधमी थे। उनके ऊधम, उनकी निडरता और उनकी हिम्मतसे शालाके शिक्षक भी घवरा जाते थे । अन्यायके खिलाफ वे सदा ही जूझते थे । इसके कुछ उदाहरण प्रसिद्ध हैं ।

सरदार नड़ियादके हाईस्कूलमें पढ़ते थे तवका एक किस्सा है । छठे दरजेमें एक शिक्षक वड़े सख्त थे । लड़कोंको पीटनेके लिए वे वेंतका खुले हाथों उपयोग करते थे । एक दिन इन शिक्षकने एक विद्यार्थीको जुरमानेकी सजा दी । वह विद्यार्थी जुरमाना नहीं लाया, इसलिए शिक्षकने उसे दरजेसे वाहर निकाल दिया ।

वल्लभभाईने सोचा कि शिक्षकके इस वरतावका कोई न कोई इलाज करना ही चाहिये । इसलिए उन्होंने

प्रमुख स्थान पर ही रहने लगे। अनेक बार वे जलयात्रा भी कर आये। भारतको स्वराज्य मिला तब तक सरदारश्री सच्चे सत्याग्रहीके रूपमें गांधीजीके साथ काम करते रहे। स्वराज्य मिल जानेके बाद उन्होंने भारतकी केन्द्रीय सरकारमें गृहमंत्रीके रूपमें काम किया और सारे भारतमें बिखरे हुए करीब ६०० देशी राज्योंके प्रश्न जैसे अनेक विकट प्रश्न हल किये।

लेकिन अब दिन-दिन सरदारकी तबीयत गिरती गई। आंतोंकी उनकी बीमारी बढ़ती ही गई। फिर भी वे अपना काम तो सतत करते ही रहते थे। अन्तमें १५ दिसम्बर, १९५० के दिन ७६ वर्षकी आयुमे सरदारश्रीका स्वर्गवास हो गया।

सरदारके चले जानेसे सारे भारतको, और खास तौर पर गुजरातको, भारी हानि पहुंची। लेकिन ईश्वरकी इच्छाके सामने हमारी क्या चल सकती है?

आज सरदारश्री अपने नश्वर शरीरके साथ भले हमारे बीच उपस्थित न हों, परन्तु गुजरातके सिरताजके समान सरदार हमारे हृदयमें तो सदा अमर ही हैं और आगे भी अमर रहेंगे।

*　　　　*　　　　*

सरदारका जीवन सचमुच हमें प्रेरणा प्रदान करनेवाला है। यहां तो मैंने उसकी थोड़ी रूपरेखा ही दी है। आजकी नई पीढ़ीको सरदारके जीवन-चरित्र[1] का अध्ययन

---

१. 'सरदार वल्लभभाई — भाग १, २'; लेखक नरहरि परीख; प्रका० नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद–१४।

अपना दरजा तो तुरन्त खाली करा ही दिया, लेकिन दोपहरकी छुट्टीमे सारे हाईस्कूलके विद्यार्थियोंको इकट्ठा करके पूरी हड़ताल करा दी । एक भी विद्यार्थी स्कूलमें न जाये, इसके लिए उन्होंने कड़ा पहरा लगा दिया । विद्यार्थियोंके बैठनेकी व्यवस्था उन्होंने पासकी एक धर्मशालामें कर दी; और वहां पीनेके पानीका भी सुभीता रखा ।

यह हड़ताल तीन दिन तक चली । स्कूलके हेडमास्टरने समझ लिया कि मामला नाजुक हो गया है । उन्होंने वल्लभभाईको बुलाकर समझाया और इस बातका यकीन दिलाया कि भविष्यमे किसी भी विद्यार्थीको गलत ढंगसे या जरूरतसे ज्यादा सजा नही दी जायगी । इस पर सरदारने समझौता करके हड़ताल वापिस ले ली ।

एक शिक्षक अपने दरजेमें काम आनेवाली पुस्तकोंका तथा विद्यार्थियों द्वारा काममें लिये जानेवाले कागज, पेन्सिल, नोटबुक वगैराका व्यापार करते थे! साथ ही वे दरजेके हर विद्यार्थीको अपने पैसोंसे ये सब चीजे खरीदनेके लिए मजबूर करते थे ।

वल्लभभाई उसी स्कूलमे पढ़ते थे । उनके कानों तक यह बात पहुंची । उन्होंने विद्यार्थियोंसे उन शिक्षकका ऐसा वहिष्कार कराया कि अंतमें उन्हें हार मानकर अपना व्यापार छोड़ देना पड़ा ।

करके देशसेवामें अपने आपको अर्पण करनेकी प्रेरणा प्राप्त् करनी चाहिये। इसके सिवा, सरदारके उदात्त व्यक्तित्वके अनेक छोटे-बड़े गुणोंका परिचय पानेका एक दूसरा महत्त्वपूर्ण साधन है उनके भाषण[१]। सरदारश्रीका तेज, उनकी निर्भयता, उनका शौर्य, उनका अपार धीरज, अन्यायके विषयमें आगकी तरह जला डालनेवाला उनका पुण्य-प्रकोप, हृदयके भीतर गहरा पैठ जानेवाला उनका व्यंग — ये सब और उनके चरित्रके ऐसे ही दूसरे लक्षण सरदारके भाषणोंमें अच्छी तरह देखनेको मिलते है। इसके अलावा, सरदारश्रीके कुछ पत्रोंके उद्धरण भी प्रकाशित हुए हैं।[२] ये पत्र भी सरदारके जीवन और कार्यको समझनेमें कीमती मदद करते हैं। सरदारके स्वभावकी बाहरी कठोरताके नीचे करुणा, प्रेम और जीती-जागती ईश्वर-श्रद्धाका जो अखंड स्रोत बहता रहता था, उसके दर्शन इन पत्रों द्वारा हमें आसानीसे होते हैं।

इस सारी सामग्रीका अध्ययन करते समय सरदारश्रीके मुखसे या उनकी कलमसे प्रकट हुई प्रेरक अनुभव-वाणीका भी सहज ही परिचय हो जाता है। इस वाणीमें प्रकट हुआ सनातन सत्य हमे सरदारकी उज्ज्वल और प्रतिभाशाली आत्माका दर्शन कराता है। अगर हम उस सत्यनिष्ठ

---

१. 'सरदार पटेलके भाषण'. संपा० नरहरि परीख तथा उत्तमचंद शाह; प्रका० नवजीवन ट्रस्ट, अहमदावाद–१४।

२. 'सरदारकी सीख'. प्रका० नवजीवन ट्रस्ट, अहमदावाद–१४।

लेकिन सरदार मैट्रिक तक जितने ऊधमी और तूफानी थे, वादमें उतने ही स्थिर और एकाग्र वन गये थे। १९१० में वे वैरिस्टर होनेके लिए विलायत गये। वहां दूसरे किसी भी काममें पड़े विना उन्होंने एकाग्र मनसे परीक्षाकी ही तैयारी शुरू कर दी थी। वे जिस जगह रहते थे वहांसे 'मिडिल टेम्पल' नामक पुस्तकालय ग्यारह-वारह मील दूर था। उनके पास अपनी वहुत थोड़ी पुस्तकें थीं और नई वे खरीदना नही चाहते थे। इसलिए रोज इतनी दूर चलकर वे पुस्तकालय जाते थे और वही वैठकर जरूरी पुस्तकें पढते थे। रोज सुवह नौ वजे वे मिडिल टेम्पल पहुंच जाते थे और शामको छह वजे पुस्तकालय वंद होता, सव कोई चले जाते और चपरासी आकर कहता कि 'साहव, अव तो सभी चले गये', तभी सरदार वहासे उठते थे।

दोपहरका भोजन और शामका चाय-नाश्ता वगैरा वे पुस्तकालयमें ही मंगाकर खाते थे। इन दिनों रोज उन्होने दससे वारह घंटे पढ़ा होगा। शामको फिरसे ग्यारह-वारह मील चलकर ही वे घर जाते थे। इस तरह रोज वावीस-चौवीस मील पैदल चलनेसे उन्हे अच्छी कसरत मिल जाती थी।

परन्तु सरदारश्रीके लिए हमारे मनमें आदर पैदा करनेवाला प्रसंग तो वह है, जो हमें उनके हृदयकी कोमल वत्सलताका दर्शन कराता है। सरदार विलायत

अनुभव-वाणीका मनन करें, तो वह हमारे जीवनको प्रेरणा देनेवाली सिद्ध हो सकती है।

आम तौर पर सरदार पटेलके बारेमें लोग यही मानते हैं कि वे लौहपुरुष थे, साफ बात कहनेवाले थे, उनका हृदय वज्रकी तरह कठोर था, वे इस युगके 'चाणक्य' थे। सत्य, अहिंसा या नीतिसे उनका क्या सम्बन्ध? — आदि। लेकिन उनके जीवनका एक पहलू ऐसा भी था, जो अत्यन्त कोमल, प्रेमसे ओतप्रोत और ईश्वर-निष्ठासे भरपूर था। उनके जीवनके इस पहलूका परिचय होने पर हम यह समझ लेते हैं कि सरदारश्री प्रच्छन्न योगी-पुरुष ही थे, भले वे बाहरसे ऐसे दिखाई नहीं देते थे; वे प्रचंड कर्मयोगी थे; 'योगः कर्मसु कौशलम्' के वे जीते-जागते उदाहरण थे। यही कारण है कि उनकी वीरतापूर्ण वाणीमें और लेखनीमें पद पद पर हमें सत्यके दर्शन होते हैं, जीवनके अनुभवोंका निचोड़ देखनेको मिलता है और आत्माको उन्नत बनानेवाली प्रेरणाका झरना बहता दिखाई देता है।

इसलिए अगर सरदारश्रीके व्यक्तित्वका सच्चा दर्शन करना हो, तो उनकी अनुभवसे पवित्र बनी हुई वाणीमें प्रकट होनेवाले प्रेरणादायी सत्यका परिचय हमें करना ही होगा।

इस दृष्टिको ध्यानमें रखकर मैंने सरदारश्रीकी अनुभव-वाणीके अमूल्य विचार कालक्रमसे इस पुस्तिकामें रखनेका नम्र प्रयत्न किया है। आशा है कि हमारी नई पीढ़ीके लिए ये विचार बोधप्रद और मार्गदर्शक सिद्ध होंगे।

गये तब उनकी पत्नी मर चुकी थी। इसलिए विलायत जाने पर भी उनका जी तो बिना मांके अपने दो छोटे बच्चोंमे ही लगा रहता था।

आम तौर पर लोग तीन वर्षमें बैरिस्टर हो सकते थे। लेकिन अगर कोई विद्यार्थी छह सत्र पूरे भरे, तो डेढ़ वर्ष बाद परीक्षा देनेकी इच्छा होने पर वह दे सकता था। इस पूरी परीक्षामें जो विद्यार्थी 'ऑनर्स'मे पास होता, उसे दो सत्रकी माफी मिल जाती थी। सरदारको तो जैसे बने वैसे जल्दी भारत लौटना था। इसलिए उन्होंने छहों सत्र पूरे पूरे भरे और सम्पूर्ण परीक्षामें बैठकर वे 'ऑनर्स'की प्रथम श्रेणीमें पहले नम्बरसे पास हुए। इसके फलस्वरूप उन्हें पचास पौंडका इनाम भी मिला था।

इस तरह सरदारने संपूर्ण परीक्षा बड़े सम्मानके साथ पास की और छह महीनेकी माफी पायी। लेकिन अभी दो सत्र बाकी रहे थे। उस अर्सेमे 'दावतें खाने' के सिवा सरदारके लिए और कोई काम नहीं रह गया था। उनका मन भारत लौटकर अपने प्यारे बालकोंसे मिलनेके लिए तड़प रहा था। इसलिए उन्होंने देश लौटनेकी इजाजत पानेके लिए अरजी दी। अरजीमें उन्होंने लिखा कि उन्हे नारूका रोग हुआ था और बीमारी भी भोगनी पड़ी थी; साथ ही यह भी बताया कि इंग्लैण्डकी सरदी उनके स्वास्थ्यको नुकसान करती है। इसके सिवा, अरजीमें उन्होंने यह भी लिखा कि इंग्लैण्डमे रहनेका खर्च बिना कारण उठाना उन्हें महंगा पड़ता है। लेकिन अरजी

हमारे महान पूर्वजोंके जी-तोड़ प्रयत्नोंके कारण ही हमारा देश आजाद हुआ है। उन सब पुण्यात्माओंका हम पर बहुत बड़ा ऋण है। उस ऋणसे मुक्त होनेका एकमात्र मार्ग है प्रेम और भक्तिसे उनका स्मरण करना और उनके बताये हुए विचारोंके अनुसार अपने जीवनको बनाना। यह पुस्तिका अगर इस दिशामें सहायक बनी, तो मैं अपने प्रयत्नको सफल हुआ मानूंगा।

बम्बई, ८–२–'६० मुकुल कलार्थी

मंजूर नही हुई! इसलिए सरदारको मजबूर होकर वहां रहना पड़ा।

आगे चलकर जब पदवीदान समारंभ पूरा हुआ, तो पहले नंबरसे सम्मानके साथ पास होनेके कारण सरदारको भोजनके आमंत्रण मिलने लगे। लेकिन दूसरे ही दिन इंग्लैण्डसे रवाना हो जानेके लिए उन्होंने जहाजका टिकट खरीद लिया है, ऐसा कह कर वे आमंत्रणोंको अस्वीकार करने लगे। जब ऐसी जल्दी मचानेका कारण कोई उनसे पूछता तब सरदार खुलासा करते: "मैं अपने दो छोटे बालकोंको घर छोड़कर आया हूं। उन बेचारोकी मां नही है। ढाई बरस हो गये हैं उनसे मिलेको। अब मैं एक दिन भी यहां नहीं रुक सकूंगा।" और अपने निश्चयके अनुसार दूसरे ही दिन उन्होने इंग्लैण्डका किनारा छोड़ दिया।

६

वह जमाना ऐसा था जब विद्याभ्यास करते-करते ही विद्यार्थियोंकी शादी हो जाती थी। सरदारकी शादी भी अठारहवें वर्षमें हो गई थी। उनकी पत्नीका नाम झवेरबा था। १९०८ मे झवेरबाको आतका रोग हो गया। वल्लभभाईके बड़े भ्राता श्री विट्ठलभाई पटेल उन दिनों बम्बईमे वकालत करते थे। इसलिए १९०८ के अंतमें वे इलाजके लिए झवेरबाको बम्बई ले गये। डॉक्टरोंने कहा कि इनका ऑपरेशन करना पड़ेगा।

सरदारकी अनुभव-वाणी

दुःख उठाये बिना सुख कभी नही मिलता। अच्छेसे अच्छा रास्ता यह है कि हम समझ-बूझकर दुःखको सहन करें ।

१८-४-'१८



दुनियामें हमें नम्रतासे, विवेकसे चलना चाहिये । और हमारे जो अधिकार हों उनकी दृढ़तासे मांग करनी चाहिये ।

१८-४-'१८



जो बात सच्ची हो उसीका आप अनुसरण करें ।

१८-४-'१८



आकाश और पाताल एक हो जाय, तो भी आप लोग अपनी प्रतिज्ञाको न तोड़ें ।

१८-४-'१८



आपके भीतर जो उत्साह और जोश हो, उसका उपयोग आपको न्यायके रास्ते लड़ी जानेवाली लड़ाईमें करना चाहिये। अपनी शक्तिका आपको दुरुपयोग नहीं करना चाहिये।

१८–४–'१८



अगर प्रजाका बल संगठित हो जाय, तो कोई भी सरकार उसका सामना नहीं कर सकती।

१८–४–'१८



कठोरसे कठोर हृदयको भी प्रेमसे वशमें किया जा सकता है। विरोधीमें जितनी कठोरता हो उतना ही हमारा प्रेम यदि बलवान हो, तो हम जरूर उस पर विजय पा सकते हैं।

मई, १९१८



आपसकी फूटसे भयंकर बरबादी होती है।

मई, १९१८



सत्ताधीशोंकी सत्ता उनकी मृत्युके साथ ही खतम हो जाती है, जब कि महान देशभक्तोंकी सत्ता उनकी मृत्युके बाद ही अपनी हुकूमत चलाती है। देशकी जनता देशभक्तोंके जीवनका अनुकरण करनेका प्रयत्न करती है, उनके गुण गाती है और दिन-रात उनका स्मरण करती है।

अगस्त, १९२०



जो प्रजा स्वराज्य प्राप्त करना चाहती है, वह लोकमतके किसी भी पक्षका अनादर नहीं कर सकती।

अगस्त, १९२०



विरोधी विचार रखनेवाला दल जितना छोटा हो उतनी ही अधिक नम्रतासे उस दलके विचारोको सुनना और उतनी ही अधिक शांतिसे उन पर विचार करना जरूरी है।

अगस्त, १९२०



कोई आदमी पत्थरको हीरा मानकर लम्बे समय तक उसे संभालकर रखे, संकटके समय उसे बेचने जाय और उसके न बिकने पर पछताये, तो इसमें उस पत्थरका क्या कसूर?

अगस्त, १९२०



भावी प्रजाका हम पर कुछ तो अधिकार है ही। हम उसके ट्रस्टी — संरक्षक — हैं।

अगस्त, १९२०



किसी भी देशकी प्रजाकी उन्नतिका आधार उसकी हिम्मत, उसके चरित्र और बलिदान करनेकी उसकी शक्ति पर होता है।

अगस्त, १९२०



क्या खतरोंके डरसे किसीने प्रजाकी उन्नतिके महान प्रयोग कभी छोड़े हैं?

अगस्त, १९२०



जो सरकार गंदी राजनीतिको अपनाती है, उसे ऊंचे चरित्रवाले पुरुषोंका हमेशा डर बना रहता है; लेकिन जो राज्य शुद्ध राजनीतिका पालन करता है, उसके तो चरित्रवान पुरुष ही आधार होते हैं।

अगस्त, १९२०



अगर हम न्याय पाना और आजादी हासिल करना चाहते हों, तो हमें अपने दोष देखना और सुधारना सीखना चाहिये, सहनशील बनना और आत्मश्रद्धा तथा धीरज रखना सीखना चाहिये और त्याग व कुरबानी करना सीखना चाहिये। थोड़ेमें कहा जाय तो जिनसे हमें न्याय प्राप्त करना है उनके दोषोंको देखनेके बजाय उनके महान गुणों और ऊंचे चरित्रका अनुकरण करना हमे सीखना चाहिये।

अगस्त, १९२०



मै मनुष्य हूं इसलिए मै भी भूलोंसे भरा हूं।

२९-३-'२१



जिसमे मनुष्यता हो वह किसी मनुष्यसे नही डरता।

२९-३-'२१



गांवकी शोभा गांवके वकीलों और डॉक्टरोसे नही बढ़ती, बल्कि उसके पैदा किये हुए जनसेवकोंसे बढ़ती है ।

२९–३–'२१



धर्म केवल मंदिर जानेमें, कबूतरों वगैरा पंखियोंको दाना चुगानेमें या चीटियोके लिए आटा डालनेमे ही पूरा नही हो जाता । आज देशके लाखों आदमी कपड़ोंके विना दु:ख भोगते है । ऐसी हालतमे हमारा पहला धर्म तो यह है कि हम हरएक घरमे चरखा शुरू करे ।

२९–३–'२१



आपको यह बात ध्यानमें रखनी चाहिये कि मौत एक ही बार आती है । हर आदमीके लिए रस्सी और बासकी अरथीके सिवा दूसरा कुछ है ही नही । आपके पास ऐसी कौनसी चीज है, जो आप दुनियासे जाते समय अपने साथ ले जाते है ? आप लोग डरते क्यों है ? आप यह बात भूल जाते है कि आपको और मुझे पैदा करनेवाला एक ही ईश्वर है । आप अपने दोष दूर कर दें और पवित्र बन जायें, तो आपको किसीसे डरनेकी जरूरत न रह जाय । जिस क्षण आप निडर बन जाते हैं, उसी क्षण आप स्वतंत्र हो जाते हैं ।

२९–३–'२१



हम निडर बनकर दूसरोंको डराये, इसके जैसा दूसरा एक भी पाप नही है। इसलिए आप ईश्वरका डर जरूर रखे ।

२९–३–'२१



अगर हमारी माताये खादीका दो सेर बोझ भी शरीर पर उठा न सकें, तो वे अपने बालकोंमें क्या ताकत पैदा करेगी ?

२९–३–'२१



पहले आप अपने मनसे डरको निकाल डालिये और आजाद बन जाइये। उसके बाद धर्मकी रक्षा हो जायगी। जिसके पांवोंमें गुलामीकी जंजीरे पड़ी हुई हैं, वह अपने धर्मकी भी रक्षा कैसे कर सकता है ?

२९–३–'२१



चुपचाप अपना कर्तव्य पालन करते रहनेसे हम सरकारके मन पर जो असर डाल सकेंगे, वह सैकड़ों कलमों या जबानोंसे भी नही डाल सकेगे ।

३१–५–'२१



प्रजाका विश्वास प्राप्त हो तो संकटके समय राज्य निर्भय रहता है । लेकिन जिस राज्यने प्रजाका विश्वास खो दिया है, वह हमेशा डरता है ।

३१–५–'२१



आज भी हमारे मन उतने साफ और स्वच्छ नही है जितने कि वे होने चाहिये। हर बातमें एक-दूसरे पर अविश्वास रखनेकी हमें आदत पड़ गई है।

३१–५–'२१

*

अहिंसा असहयोगका प्राण है; हिंसा उसकी मृत्यु है।

३१–५–'२१

*

अस्पृश्यता — छुआछूत — हिन्दू धर्म पर लगा हुआ कलंक है। वह धर्मके नाम पर चलनेवाला निरा ढोंग है। उसे हमें मिटाना ही होगा।

३१–५–'२१

*

उतावले बनकर, बिना सोचे-विचारे, दूसरों पर आरोप लगाना हमारा अपना द्रोह करना है।

३१–५–'२१

*

स्वराज्य मिल जाने पर भी अगर हम स्वदेशी धर्मका पालन नही करेंगे, तो वह हमें पचनेवाला नही है।

३१–५–'२१

*

पश्चिमकी सभ्यता संसारमे फैली हुई अशातिकी जड़ है। राजा और प्रजाके बीच झगड़ा करानेवाली, बड़ी बड़ी सल्तनतोंका सर्वनाश करानेवाली, दुनियाके बड़े बड़े राज्योंको ग्रहोंकी तरह एक-दूसरेसे भिड़ाकर पृथ्वी पर प्रलय मचानेवाली और मालिकों तथा मजदूरोंको आपसमें

लड़ानेवाली पश्चिमकी सभ्यता शैतानी हथियारों और सामग्रीके सहारे खड़ी है ।

आत्मबलको पूजनेवाला हिन्दुस्तान शैतानके इस तेजसे कभी धोखा नहीं खायेगा ।

३१–५–'२१



पशुबलका उपयोग करनेसे हमें ही अधिक कष्ट सहना पड़ता है । इससे हम कभी ऊपर नहीं उठते, बल्कि हमेशा नीचे ही गिरते जाते हैं ।

१८–९–'२१



देशके साधारण लोग जितना त्याग करेंगे, स्वराज्य हासिल करनेके लिए जितनी कुरबानी करेंगे, उतनी दूसरे कोई करनेवाले नहीं हैं ।

१८–९–'२१



स्वराज्य जल्दी मिलेगा या देरसे, इसका आधार देशकी प्रजाके संयम और त्याग पर ही है ।

१८–९–'२१



नेता बननेकी कुंजी सेवामें है ।

नवजीवन, २८–१२–'२१

सहिष्णुता —— कष्ट सहन करनेका गुण —— अहिंसाका प्राण है ।

नव० २८–१२–'२१



गांधीजीने हमारे लिए अखूट दौलत विरासतमे रखी है। उसका अच्छा उपयोग करना हमारे हाथकी बात है।

नव० २६–३–'२२



कोई इमारत बनानेवाला राज इमारतका नकशा तैयार करनेवाले इंजीनियरकी शक्ति रखनेका दावा नहीं करता, फिर भी नकशेके मुताबिक इमारत खड़ी करनेमे उसे कोई कठिनाई मालूम नही होती; उसी तरह गांधीजीके पीछे चलनेवाले लोग स्वराज्यकी इमारतके उनके बनाये हुए नकशेको अच्छी तरह समझ गये होंगे, तो उस नकशेके मुताबिक इमारतका काम आगे बढ़ानेमे उन्हें कोई परेशानी नही होगी।

नव० २६–३–'२२



स्त्रियोंकी शोभा क्या महीन साड़ियां पहननेसे बढ़ेगी?

नव० २६–३–'२२



'नवजीवन'[1] की फाइल शांतिपूर्ण असहयोगका पुराण है; उसमे कोई एक अक्षर भी नही बढा सकता।

नव० २६–३–'२२



अब केवल शरीर और धनकी ही रक्षाका धर्म पालनेका जमाना बीत चला है।

नव० ३०–७–'२२



---

१ गाधीजीके सपादकत्वमें अहमदाबादसे निकलनेवाला गुजराती साप्ताहिक।

यह धर्मको ताकमे रखकर तरह तरहकी बेईमानीसे पैसा कमानेका जमाना है । ऐसे जमानेमें अधिकारसे प्राप्त हुई संपत्तिको धर्मके खातिर छोड़ देनेवाले आदमीको लोग मूर्ख कहें, तो इसमें आश्चर्य कैसा ?

नव० ३०–७–'२२

ॐ

शक्तिके अभावमें केवल श्रद्धासे कोई काम नहीं होता । किसी भी बड़े कामको पूरा करनेमे श्रद्धा और शक्ति दोनोंकी जरूरत होती है ।

नव० १४–१–'२३

ॐ

जल्दीमें चढ़नेवाले उत्साहसे कोई बड़ा परिणाम पैदा करनेकी आशा नही रखनी चाहिये ।

नव० २९–४–'२३

ॐ

अगर जनताकी सच्ची और शुद्ध सेवा करनेका हमारा संकल्प होगा तो वह हमें छोड़ेगी नही ।

नव० २९–४–'२३

ॐ

दुराग्रहीके — गलत आग्रह रखनेवालेके — मतको लाचारीसे मान लेने पर प्रजा ऊपर नहीं चढ़ती, बल्कि नीचे ही गिरती है ।

नव० २४–६–'२३

ॐ

थोड़ेसे जिद्दी लोगोंको — फिर वे देशके महान नेता ही क्यों न हों — मनचाहा काम करनेकी सुविधा देकर

शांत करनेके लिए जो लोग अपना निश्चय छोड़ देते हैं और दूसरोंसे छुड़वानेका आग्रह रखते हैं, उन्हें अपने इस व्यवहारसे देशको होनेवाले अपार नुकसानका खयाल नहीं होता ।

नव० २४–६–'२३



अगर मैं विरोधियोंमें आपसी समझौतेकी सच्ची इच्छा देखूं, तो मैं खुद तो शिष्टाचारके आमंत्रणकी प्रतीक्षा भी न करूं ।

नव० ९–९–'२३



हमने जो कुछ हासिल किया या जो कष्ट सहन किया, उसमें हमारी विजय नहीं है । परन्तु हमारा अंतिम ध्येय प्राप्त न हो तब तक दिनों-दिन अधिक कष्ट सहनेकी हमारी तैयारी बढ़े, इसीमें हमारी सच्ची विजय है ।

नव० ९–९–'२३



मैं टीकाओं और आलोचनाओंसे डरता नहीं ।

नव० ९–९–२३



जहां मैं असत्य देखता हूं वहां मेरा हृदय कांप उठता है ।

नव० ९–९–'२३



सारी दुनियाको संतोष देनेकी ताकत मुझमें नही है ।

नव० ९–९–'२ ३



जीतके समय हमें अधिक नम्र बनना चाहिये । हार-जीतका देनेवाला तो वह ईश्वर है । जीतनेके बाद घमड करनेवाला आदमी उसी जगह हार जाता है ।

नव० ९–९–'२३



हम इतनी श्रद्धा मनमे रखें कि सच्चे काममें ईश्वर हमारे साथ है, ईश्वर हमारी मदद करेगा ।

नव० ९–९–'२३



जो मौतसे डरता है उसीके लिए बन्दूक है ।

नव० ६–१२–'२३



हम दो घोड़ों पर सवार होने जायंगे तो जरूर गिरेंगे । लड़ाईमे कूदें उसके पहले ही हमे दोमें से एक घोड़ेका चुनाव कर लेना चाहिये । मैदानमें पहुंच जानेके बाद जो सैनिक घोड़ेके चुनावके विचारमें पड़ता है, वह जरूर लड़ाईमें हारता है । हमारी अपनी शक्ति हमे लड़ाईमे जितायेगी या दूसरों पर रखी जानेवाली आशा, इसका फैसला करके आपको किसी एक पर सवार होकर लड़ाईके मैदानमे पहुंचना चाहिये ।

नव० ६–१२–'२३



जब सरकार किसी आदमीको बहुत ज्यादा सजा देती है, तब वह आदमी आदमी न रहकर राक्षस बन जाता है।

नव० ६–१२–'२३



किसीको गाली देनेमे या मारनेमे बड़प्पन नही है; बड़प्पन धर्मके खातिर दुःख झेलनेमे है।

नव० ६–१२–'२३



जो जनता हजारों साधुओंको रोज लड्डू और मालपूए खिलाती है, वह अपने सेवकोंको जुवार-बाजरेकी रोटी खिलानेमे कभी आनाकानी नही करेगी।

नव० ६–१२–'२३



हमारी प्रार्थना तो केवल एक ईश्वरसे ही है कि हे भगवान, हम सत्यके मार्ग पर चलते हें, तू ही हमारी रक्षा करना।

नव० ६–१२–'२३



सत्यके रास्ते मुड़ना हो तो बुराईका हमे त्याग करना चाहिये और अपने चरित्रको सुधारना चाहिये।

नव० ६–१२–'२३



भगवे कपड़े पहननेवाले लोग ही साधु नही हें; जो जनताकी सच्ची सेवा करते हें वे भी साधु हें।

नव० ६–१२–'२३



झूठे सबूतोंसे अन्याय सरकारी अदालतमें भले न्यायका रूप ले लेता हो, लेकिन सत्यकी अदालतमें तो झूठे सबूतोंसे अन्याय दोहरा अन्याय ही बनता है ।

नव० ९-१२-'२३



मनपसंद सलाह तो सब कोई मान लेते है; लेकिन पसंद न आनेवाली सलाह भी जब आप लोग मानने लगेंगे, तभी स्वराज्यकी स्थापना संभव होगी ।

१२-१-'२४



यमके दूतसे कोई छिपकर नहीं रह सकता । वह तो इस दुनियामें हमे कहींसे भी खोज निकालेगा ।

१२-१-'२४



अपराध स्वीकार करके फांसीके तख्ते पर लटक जानेमें बहादुरी है । लेकिन अपराध करके छिप जानेमें तो कायरता ही है ।

१२-१-'२४



मै आपको सरकारके साथ लड़ाता हूं, तब आप मुझ पर बड़ी ममता और प्रेम दिखाते हैं । लेकिन ज़ब मैं आपको आपकी कमजोरियोंके साथ लड़ाऊंगा, तभी इसका पता चलेगा कि आपका यह प्रेम सच्चा है या झूठा ।

१२-१-'२४



आपको सत्ताका दुरुपयोग नही करना चाहिये ।

१२–१–'२४



जिन लोगोंमें कमजोरी है, वे हमारी भलमनसीसे सुधर जायगे । अगर उन्हे अच्छा बनाना हो, तो हमे ज्यादा अच्छा बनना चाहिये ।

१२–१–'२४



अगर हम खुद ही अन्याय करने लगें, तो हम दूसरोसे न्यायकी मांग नही कर सकते ।

१२–१–'२४



जो लोग रास्ता भूले हुए है, उन्हें आप माफ कर दे । उन पर अपना प्रेम बरसाये ।

१२–१–'२४



अगर हमने सत्याग्रहकी लड़ाईका सच्चा अर्थ समझ लिया हो, तो हमारी जीत होनेके बाद हममें नम्रता आनी चाहिये और हमारा अभिमान मिट जाना चाहिये । अगर ऐसा न हो तो कहा जायगा कि हमने विरोधियोंसे द्वेष ही किया है ।

नव० २०–१–'२४



जब हमारे नेताओमे ही श्रद्धा नही रह जायगी, तब हम जरूर हार जायंगे ।

नव० २०–१–'२४



हमें बिना कारण अपनी शक्ति नहीं खोनी चाहिये।

नव० २०–१–'२४



आज ही काम करनेका सच्चा अवसर है।

नव० २०–१–'२४



जब खूब जोशमे लड़ना होता है, तब लड़नेवाले लोग मिल जाते हे। नशेकी खुमारीमे लड़नेके लिए तो कई आदमी मिल जाते हे। लेकिन संयम रखकर नीरस मालूम होनेवाला काम करनेके लिए सिर्फ गिनतीके ही बहादुर मिलते हैं; दूसरे सब भाग जाते है।

नव० २०–१–'२४



मे सब कार्यकर्ताओंसे यही बात कहता हूं कि अगर आप बापूके प्रति दिलसे वफादार हों, तो आप अपनी आजकी जगह न छोड़े। अगर आपके सिर जिम्मेदारी आई है, तो आप थककर या घबराकर भागें नहीं।

नव० २०–१–'२४



भगवानने हमे दूसरे अनेक सुख दिये है। उन सुखोंको याद करके हमें भगवानका आभार मानना चाहिये और आनन्दमे रहना चाहिये। जिन दु:खोंको दूर करनेका कोई उपाय ही नही है, उन्हे याद करके दुखी होनेसे तो भगवानके दिये हुए दूसरे सुखोंकी अवगणना होती है।

४–४–'२४



मनुष्यके धीरजकी परीक्षा दु:खके समय ही होती है। जब जी घबराने लगे तब हमें भगवानका नाम लेना चाहिये। सुख-दु:खका देनेवाला तो वही है। अपनेसे ज्यादा दुखी लोगोंके दु:खको हमें याद करना चाहिये और जो सुख हमें मिला है उसके लिए भगवानका उपकार मानना चाहिये। अनेक प्रकारके सुख मिलने पर भी थोड़ेसे दु:खको ही याद करके यदि हम सुखोंको भुला दे, तो कहा जायगा कि हम ईश्वरका द्रोह करते हैं। इसलिए अपने सुखोंको याद करके हमें अधिक सुखी होना चाहिये।

७–४–'२४

ॐ

मनकी शांतिका आधार जितना खुद तुम्हारे ऊपर है, उतना दूसरे साधनों पर कभी नही हो सकता।

१–५–'२४

ॐ

मनको मजबूत बनाकर और व्यर्थके विचारोंसे उसे दूर रखकर हमे आनन्दमे रहना चाहिये। हम निश्चय कर ले तो कैसी भी परिस्थितियोंमे आनन्दी बने रह सकते है। लेकिन मनके कमजोर पड़ जाने पर सब बातका सुख होते हुए भी हम दुखी रह सकते हैं।

१–५–'२४

ॐ

हमें अपनी संस्थाकी वफादारी नही छोड़नी चाहिये।

३०–३–'२५

ॐ

हमे एक-दूसरेकी गलतियों पर नजर नही रखनी चाहिये ।

२५–१०–'२५



जनसेवा करनी हो तो हमें अनेक प्रकारके स्वभाववाले मनुष्योंके संपर्कमें आना होगा और उनसे काम लेना होगा । उसमें क्षमाशील बनकर हमें मान-अपमान सहनेका सबक सीखना होगा; और यह सबक सबसे पहले हमे अपने घरमे ही सीखना होगा । अगर हम अपने घरके लोगोंके साथ प्रेमसे न रह सकें, तो जनसेवाका काम करना कठिन होगा ।

२५–१०–'२५



जिस घरमे लड़ाई-झगड़ा चलता हो, उसमे सुखका वास नही हो सकता । इसलिए हमें हिल-मिलकर रहना सीखना चाहिये । सब लोगोंके स्वभाव एकसे नहीं होते ।

२५–१०–'२५



जिस प्रकार बैलकी गरदन पर जुआ रखनेसे वह अपमानका दुःख नहीं समझता, उसी प्रकार अगर आप भी विदेशी हुकूमत द्वारा किये जानेवाले अपमानको न समझते हों, तो आपको भी दुःख नही होगा !

नव० १२–६–'२७



कोई धर्मात्मा पुरुष, कोई तपस्वी महात्मा, जो बात कहे उसे सुनना चाहिये और अगर वह मीठी लगे, तो उस पर अमल करना चाहिये। मीठी मीठी बातें सुनकर केवल प्रसन्न ही नहीं होना चाहिये, बल्कि उन पर अमल भी करना चाहिये।

नव० १२–६–'२७



हमारा काम यह है कि हम अपने मतभेदोंको बड़ा रूप न दें, वर्ना हमारे बच्चे आपसमें लड़ मरेंगे।

नव० १२–६–'२७



हमें आपसमें एक-दूसरेकी चुगली नहीं खानी चाहिये।

नव० १२–६–'२७



जो लोग बलवान हैं, सुखी हैं, साधनवाले हैं, उन पर एक आरोप, एक इलजाम यह है कि वे घमंडी हैं। और वे इतने ज्यादा घमंडी होते हैं कि ईश्वरको भी भूल जाते हैं। ईश्वरके दरबारमें राजा-रंक, ऊंच-नीच, सब बराबर हैं। उस दरबारमें बलवान और सुखी लोगोंको अपना हिसाब देना होगा, यह बात वे भूल जाते हैं। इसीलिए अपनेसे नीचे वर्गके लोगोंको वे सताते हैं, उनसे बेगार कराते हैं!

नव० १२–६–'२७



किसी भी आदमीको अछूत मानना पाप है। अस्पृश्यता — छुआछूत — निरा भ्रम है। अगर कुत्तेको छूकर हमे नहाना नहीं पड़ता, बिल्लीको छूकर भी नहाना नहीं पड़ता, तो फिर जो हमारे जैसा मनुष्य है उसे छूकर हमे क्यों नहाना चाहिये? हिन्दुओ, तुम जागो। तुम अपने ही जैसे मनुष्योंको अछूत मानते हो, यह तुम्हारी भूल है।

नव० १२–६–'२७



जो लोग सुखी है वे सुखके घमंडमें दूसरोंको दुखी बनायें यह ठीक नहीं है। हमारी बुद्धि दूसरोंको धोखा देनेके लिए हमें नहीं मिली है। भगवानने हमे बुद्धि इसलिए दी है कि हम उसका अच्छा उपयोग करके दूसरोंको सुखी बनायें। गरीबोंको, दुखियोंको हमे आसरा देना चाहिये।

नव० १२–६–'२७



जिस किसानकी छायामे सब लोग रहते हों, सबका समावेश होता हो, वही सच्चा किसान है। पुराने जमानेमें अठारहों वर्ण किसानके पीछे पलते थे, इसका कारण यह था कि किसानके हृदयमे प्रेम था। उसके प्रेमके प्रतापसे अठारहों जातियोंका एक परिवार, एक शरीर बन जाता था। ऐसी व्यवस्था फिरसे खड़ी करनेके लिए हमे अपने दिल बदलने होंगे, अपने दिलोंमे प्रेम रखना होगा।

नव० १२–६–'२७



जब तक हमारे देशका शासन विदेशियोके हाथमें है, तब तक हमें सुख नही मिल सकता ।

नव० १२–६–'२७

ॐ

अगर आप धर्मराज्यकी, रामराज्यकी स्थापना करना चाहते हों और बाप-दादोंका जीवट आपके भीतर हो, तो आप हिम्मतसे काम लें और अच्छी बातोको अमलमे लायें ।

नव० १२–६–'२७

ॐ

आजके नौजवान तो अपने कपड़ोंका बोझ भी नहीं उठा सकते !

नव० १२–६–'२७

ॐ

विवाह जैसी गंभीर बात आज गुड्डे-गुड़ियोंका खेल बन गयी है !

नव० १२–६–'२७

ॐ

इन छोटी छोटी बालाओंको आप कितने बारीक कपड़े पहनाते हैं ? ऐसे कपड़े इन्हे पहनाना हमे शोभा नही देता ।

नव० १२–६–'२७

ॐ

अगर मेरे हाथमें सत्ता हो, तो बारह-तेरह वर्षकी बालाओका विवाह करनेवालोको मै बन्दूकसे मार देनेका या फांसीके तख्ते पर लटका देनेका कानून बना दू ।

नव० १२–६–'२७

ॐ

छोटी छोटी बालिकाओं पर स्त्रीके कर्तव्योंका सारा बोझ डालकर आप उन्हे कुचल न डाले! वे कोमल फूल है, खिलती कलियां है। उन्हें समयसे पहले क्यों मारते है?

नव० १२–६–'२७



जिन लोगोंमे जीवनकी मामूली जरूरतें पूरी करनेकी भी शक्ति न हो, उनके सामने भविष्यमें आनेवाली बड़ी बड़ी जिम्मेदारियोंका चित्र रखना मैं उचित नहीं समझता।

६–७–'२७



मीठे मीठे शब्दोंके आधार पर झूठी आशायें बांधकर कर्तव्यको चूकनेसे हमें भारी नुकसान हो सकता है।

६–७–'२७



आम तौर पर हमारे लोग तन्दुरुस्ती और सफाईके नियमोंका पालन करनेमे बड़े ढीले होते है। और ऐसी बातोंमे वे न तो अपने धर्मको समझते है और न पड़ोसी-धर्मको समझते है।

अपने घरका कूड़ा-कचरा पड़ोसीके दरवाजे पर फेंकना उन्हे गलत नहीं मालूम होता। ऊपरकी मंजिलकी खिड़कीसे या झरोखेसे नीचे कचरा डालनेमे या पानी फेंकनेमे उन्हें कोई हिचकिचाहट नहीं होती।

हमारी स्थानीय स्वराज्यकी संस्थाओंको देखकर या हमारे शहरोंमें प्रवेश करने पर विदेशियोंको कही भी स्वराज्यका चिह्न नजर नहीं आयेगा।

हमारे लोगोंमे चाहे जहां थूकनेकी, चाहे जहां पेशाव करनेकी और चाहे जहां गंदगी पैदा करनेकी आदत हो गई है ।

गांवोंकी हालत शहरोंसे अच्छी नहीं है । किसी भी गांवमें आप प्रवेश करें तो आपको घूरेके ढेर पड़े दिखाई देंगे । गांवके तालावके आसपास गांवका पाखाना वन जाता है । गांवके कुएंके चारों ओर कीचड़ हो जाता है और पानी सड़ता रहता है ।

ऐसी हालतमें सरकारका मुह ताकते रहने और अपने हाथसे कुछ न करनेको मैं महापाप समझता हूं ।

६–७–'२७

ॐ

हमें सच्ची स्थितिको समझकर सरकार पर आधार रखना छोड़ देना चाहिये । हमें अपनी जिम्मेदारी खुद ही उठाने लगना चाहिये और लोगोंको भी उठानेकी वात समझानी चाहिये ।

६–७–'२७

ॐ

हम अपनी मुसीवतें खुद झेलें, इसीमें हमारी शोभा है ।

८–८–'२७

ॐ

जिन्होंने गांवोंके दुःख अपनी आंखोंसे नहीं देखे हैं, उन्हे सच्चे दुःखकी कल्पना होना कठिन है ।

नव० २१–८–'२७

ॐ

भीख मांगनेको बढ़ावा देनेमे पुण्य नहीं लेकिन पाप है ।

नव० २८-८-'२७

केवल पैसेसे लोगोंका दु:ख नही मिट सकता । स्थिर मनसे लोगोंके बीच बसकर उनकी जरूरतों पर नजर रखते हुए हमें लम्बे समय तक उनकी मदद करनी होगी ।

नव० १८-९-'२७

वड़ेसे बड़े जुल्म करनेवाला राज्य भी प्रजा जब संगठित हो जाती है, तब उसके सामने टिक नही सकता ।

वारडोली सत्याग्रह. १९२८

निश्चय खुद आपको करना है । किसीके जोश दिलानेसे, किसी अन्य पर या मेरे जैसे पर आधार रखकर आप निश्चय न करे ।

वारडोली : १९२८

अगर हमारी बहनें, मातायें और पत्नियां हमारा साथ न दें, तो हम आगे नहीं बढ़ सकेंगे ।

वारडोली . १९२८

आप लोग जाग्रत हो जाइये । खेल-कूदमें या मौज-शौकमें एक क्षणका भी समय न विताइये ।

वारडोली . १९२८

हमारी तालीम ही हमारी जीतकी कुंजी है ।

बारडोली : १९२८



आप लोग डरते डरते नरम स्वभावके बन गये हैं। आप लड़ना-झगड़ना नहीं जानते, यह आपका गुण है । लेकिन इससे आपका स्वभाव इतना नरम नहीं बन जाना चाहिये कि अन्यायका विरोध करनेकी चिढ भी आपमें न रह जाय । यह तो कायरता है ।

बारडोली : १९२८



अपनी आंखोंमें खुमारी आने दीजिये और न्यायके खातिर तथा अन्यायके खिलाफ लड़ना सीखिये ।

बारडोली : १९२८



पागल हाथी घमडमें यह मानता है कि मैंने बाघ और सिंहको भी पछाड़कर खतम कर दिया है, तब मेरे सामने इस मच्छरकी क्या बिसात है? लेकिन मैं मच्छरको समझाता हूं कि तू इस घमंडी हाथीको जितना इतराना हो इतरा लेने दे। उसके बाद मौका देखकर इसके कानमें घुस जाना! क्योंकि इतनी बड़ी शक्तिवाला हाथी भी मच्छरके कानमें घुस जाने पर बेचैनीसे तड़पने लगता है और सूंड पछाड़ पछाड़ कर जमीन पर लोटने लगता है। मच्छर छोटा है इसलिए उसे हाथीसे डरना ही चाहिये ऐसी बात नहीं है ।

बड़े मटकेसे कई ठीकरियां बनती हैं, लेकिन उनमें से एक ही ठीकरी उस मटकेको फोड़नेके लिए काफी होती है।

तब ठीकरी मटकेसे किसलिए डरे? वह तो उस मटकेको अपने जैसी अनेक ठीकरियोंमे बदल सकती है। फूटनेका डर अगर किसीको रखना चाहिये, तो मटकेको रखना चाहिये। ठीकरीको क्या डर हो सकता है?

वारडोली . १९२८



मै गुजरातकी प्रजाको तेजस्वी देखना चाहता हूं। किसीको यह कहनेका मौका नहीं मिलना चाहिये कि कंगाल या झूठी बनिया-वृत्तिका गुजराती इस दुनियामे क्या कर सकता है? दूसरे लोग जितने बहादुर हो सकते है, उतना ही बहादुर गुजराती भी हो सकता है। शर्त इतनी ही है कि वह अपने स्वाभिमानके लिए मरना सीखे।

मै गुजरातियोंसे कहता हूं कि शरीरसे आप भले दुबले-पतले हों, लेकिन कलेजा तो बाघ और सिंहका रखिये। अपने सम्मानके लिए आप मरनेकी शक्ति हृदयमे रखिये। और इतनी बुद्धि रखिये कि कोई आपको आपसमें लड़ा न सके।

वारडोली : १९२८



इस धरती पर अगर किसीको सीना तानकर चलनेका अधिकार हो, तो वह जमीन जोतकर धन-धान्य पैदा करनेवाले किसानको ही है।

वारडोली : १९२८



सारा जगत किसानके सहारे टिका हुआ है। किसान और मजदूरके बल पर ही सारी दुनियाका निर्वाह होता है। फिर भी अगर सबसे ज्यादा जुल्म कोई सहते हों, तो वे किसान और मजदूर ही हैं। क्योंकि ये दोनों बिना कुछ बोले, चुपचाप, जुल्म सहते रहते हैं!

वारडोली १९२८



किसान डरकर दुःख सहे और जालिमकी लातें खाये, इससे मुझे शरम आती है। मैं गिरे हुए किसानको खड़ा करना चाहता हूं और ऊंचा सिर रखकर घूमनेवाला बनाना चाहता हूं। इतना करके अगर मैं मरूं, तो अपने जीवनको सफल हुआ मानूंगा।

वारडोली १९२८



हममें जो लोग कमजोर हैं उन्हें सहारा देना जरूरी है।

वारडोली, १९२८



मेरा कर्तव्य स्वयं जाग्रत रहकर आपको सदा जाग्रत रखना है।

वारडोली १९२८



अपनी रक्षाके लिए संगठन न करना आत्महत्या करनेके बराबर है।

वारडोली १९२८



विरोधीका बहिष्कार करके हमें अपनी मनुष्यताको नही छोड़ना है, परन्तु विरोधीको मनुष्य बनाना है ।

बारडोली : १९२८



बहिष्कार सिर्फ अपनी रक्षाके लिए होना चाहिये । जिस प्रकार छोटे बढ़नेवाले पौधेके लिए बाड़की जरूरत होती है, दीमकसे बचाने लिए उसके तनेमें गेरू या डामर लगाना जरूरी होता है, उसी प्रकार स्वतंत्रताका स्वाद चखकर स्वतंत्र रूपसे अपने पैरों पर अभी अभी खड़ा रहना सीखे हुए समाजके लिए समाज-द्रोहियोंसे बचनेके खातिर बहिष्कारका उपयोग करना जरूरी है ।

बारडोली : १९२८



बहिष्कार करनेका हमें हक है, लेकिन अपने लोगोंके खिलाफ । आपमें से जो लोग आपके साथ दगा करे, उनका आप जरूर पक्का बहिष्कार करें ।

बारडोली . १९२८



मोक्षका मार्ग तो हमारे अपने ही हाथमे है । इसके लिए हमे कुछ संयम सीखने हैं, कुछ पाप धोने है और कुछ झूठे अभिमान हों तो उन्हे छोड़ना है ।

बारडोली : १९२८



हुकूमतके जुल्मोंके खिलाफ आप लड़े, यह मुझे पसन्द है। लेकिन हमें जानना चाहिये कि खुद अपनी ही मूर्खतासे हम अपार दुःख भोगते है, हम खुद ही अपने दुःखोंके लिए जिम्मेदार है। तो क्या अपनी इस स्थितिके खिलाफ हम नहीं लड़ेंगे? इसके खिलाफ तो हमें दिन-रात लड़ते रहना चाहिये।

वारडोली : १९२८



जिस तरह हम अंग्रेज सरकारका दिल वदलना चाहते थे, उसी तरह खुद अपने दिलोंको भी हमे वदलना होगा।

वारडोली १९२८



आप सब जानते होंगे कि पांडवों और कौरवोंके गुरु द्रोणाचार्यका एक भील शिष्य था, जिसने द्रोणाचार्यसे एक भी वात नहीं सुनी थी। लेकिन वह अपने गुरुकी मिट्टीकी मूर्ति वनाकर उसकी पूजा करता था और उसके चरणोंमे प्रणाम करके द्रोणाचार्यकी वाणविद्या वह सीखा था। जितनी विद्या उस भील शिष्य (एकलव्य) ने प्राप्त की, उतनी द्रोणाचार्यके दूसरे किसी शिष्यने प्राप्त नहीं की थी। इसका कारण क्या था? कारण यह था कि उसमें अपने गुरुके प्रति सच्ची भक्ति थी, श्रद्धा थी, उसका हृदय शुद्ध था और उसमे शिष्यकी योग्यता थी।

मुझे आप जिनका शिष्य कहते है, वे (गांधीजी) तो मेरे पास ही रहते है। इसमे मुझे जरासी भी

शंका नही कि गांधीजीका पट्टशिष्य तो क्या, उनके अनेक शिष्योंमे से एक शिष्य वन सकू इतनी भी योग्यता मुझमें नहीं है ।

मैं आशा रखता हूं कि हिन्दुस्तानमें उनके अनेक ऐसे शिष्य पैदा होंगे, जिन्होंने गांधीजीके दर्शन नही किये होंगे, जिन्होंने गांधीजीके शरीरकी नही परन्तु उनके मंत्रकी उपासना की होगी । इस पवित्र भारत-भूमि पर कोई तो ऐसा शिष्य जरूर जागेगा ।

वारडोली १९२८



देशका कल्याण न तो मेरे हाथमे है और न गाधीजीके हाथमे है, बल्कि देशके नौजवानोंके हाथमे है । हर देशमे आजादी वहांके नौजवानोंने हासिल की है, उन्हीने उसे पचाया है और आगेके नौजवानोंके हाथमें उसे सौपा है ।

वारडोली: १९२८



तालीम दो प्रकारकी होती है: एक तालीम मनुष्यकी मनुष्यताको खतम कर देती है; और दूसरी मनुष्यको उसकी मनुष्यताका भान कराती है। एक मनुष्यको घमंडके नशेमे चूर कर देती है, दूसरी मनुष्यको — पुरुष और स्त्रीको — उसके कर्तव्यके प्रति जाग्रत करती है । यह दूसरी तालीम ही सच्ची तालीम है ।

१४–११–'२८



दुनियामें हम सब कम या ज्यादा गुनहगार हैं। लेकिन जो आदमी पसीना बहाकर खेतमें मेहनत करता है, और दुनियाके लिए भोजन और कपड़ेके साधन खेतमें पकाता है, वह दुनियामें कमसे कम गुनहगार है।

१४–११–'२८

ॐ

बहनो, तुम अबला हो, कमजोर हो, ऐसा क्यों मानती हो? तुम तो शक्तिका अवतार हो। अपनी माताके बिना इस दुनियामें कौनसे पुरुषका जन्म हुआ है? इसलिए तुम अपनी इस दीनताको छोड़ दो।

१४–११–'२८

ॐ

जहां स्त्री पर विश्वास और प्रेम होता है, वहां उसके साथ व्यवहार भी अलग ही प्रकारका होता है, उसके साथ भाषा भी दूसरे ही प्रकारकी बोली जाती है और कुछ अलग ही प्रकारका स्नेह और रस उस व्यवहारमें दिखाई देता है। स्त्रीके साथ ऐसा व्यवहार हो तभी वीर सन्तान पैदा की जा सकती है, और उसका भलीभांति पालन-पोषण हो सकता है।

अगर आप:

ढोल, गंवार, शूद्र, पशु, नारी।
ये सब ताड़नके अधिकारी॥

इसी नीतिको अभी तक मानते हों, तो हम गुलाम ही रहेंगे। इतना आप समझ लीजिये कि स्त्री माता बननेवाली

है, अतः वह नमस्कार करने योग्य है; लकड़ीसे ताड़न करने योग्य नहीं।

१८-१२-'२८



जो किसान कपास पैदा करके भी कपड़े बाहरसे खरीदता है, उसे मैं किसान ही नहीं कहता।

१८-१२-'२८



इस शरीरमें अनेक अलग अलग अंग हैं, लेकिन वे सब कितने हिल-मिलकर अपना अपना काम करते हैं? जिस प्रभुने यह शरीर बनाया है उसकी रचनाकी बलिहारी है! पैरमें कांटा चुभते ही ठेठ सिर तक उसका दर्द पहुंच जाता है। अंग उसने जरूर अलग अलग बनाये हैं, लेकिन उनमें से एकके बिना भी शरीरका काम अच्छी तरह नहीं चल सकता।

गांवको शरीरके अंगोंकी तरह मिल-जुलकर काम करना चाहिये। गांवमें अगर एक भी आदमी दुखी हो, एक भी भूखा हो, तो सारे गांवको उसके दुःखका अनुभव होना चाहिये।

१८-१२-'२८



साम्राज्यकी शरणमें घुसनेके बजाय जनताका प्रेम हासिल करनेमें राज्यकी ज्यादा सलामती है।

मार्च, १९२९



प्रजाका विश्वास राज्यकी निर्भयताकी निशानी है। इतना याद रखना चाहिये कि राज्य प्रजाके लिए है, प्रजा राज्यके लिए नही है।

मार्च, १९२९



केवल पैदावार बढानेमें ही राज्यकी समृद्धि और खुशहाली समायी हुई नहीं है।

मार्च, १९२९



कमजोरकी रक्षा करना राज्यका धर्म है। बलवान तो अपनी रक्षा खुद कर सकते हैं। लेकिन अगर कमजोरकी रक्षा राज्य न करे तो दूसरा कौन करेगा?

मार्च, १९२९



जो प्रजा राज्यका जुल्म सहन करती है, वह राज्यको जुल्मी बनानेमें सहायक होती है। जुल्मका विरोध करना प्रजाका धर्म है।

मार्च, १९२९



हर देशकी प्रजाकी उन्नतिका आधार अधिकतर उसके शिक्षित लोगों पर होता है।

मार्च, १९२९

अपने कर्तव्यमें निष्ठा रखनेवाला पुरुष कभी निराश नहीं होता ।

मार्च, १९२९



मैं यह अभिमान रखता हूं कि स्वतंत्रता जितनी मुझे प्रिय है, उससे अधिक प्रिय शायद ही दूसरे किसीको होगी।

नव० ७–४–'२९



बहुत बोलनेसे लाभ नहीं होता, बल्कि नुकसान होता है ।

नव० ७–४–'२९



जिसे दिन-रात दूसरोंकी निन्दा करनेकी आदत पड़ जाती है, उसकी दशा बड़ी दयाजनक हो जाती है । उसकी बात सुननेवालेकी स्थिति भी दयाजनक हो जाती है ।

नव० ७–४–'२९



मेरी इच्छा नौजवानोंके खेल खेलनेकी होती है, लेकिन बूढ़ोंका अनुभव मुझे संयम रखना भी सिखाता है ।

नौजवानोंके उत्साहसे मैं जितनी प्रेरणा प्राप्त करता हूं, उतना ही वृद्धोंका अनुभव भी मैं जीवनमें जोड़ना चाहता हूं ।

बूढ़ोंकी हंसी उड़ानेवाला नौजवान अपने पिताकी विरासतको खतम कर देता है ।

नव० ७–४–'२९



आप इस बातका ध्यान रखें कि आपके कान भी सभ्यता सीखें, उन्हें दूसरोंकी निन्दा सुननेकी आदत न पड़े।

नव० ७-४-'२९



आपकी जबानमें खुले आम अपनी बात कहनेकी हिम्मत नहीं है, लेकिन कोनेमें बैठकर बोलनेकी आदत है। यह आदत आप छोड़ दीजिये। कोनेमें बैठकर बोली हुई बात बेकार साबित होती है।

नव० ७-४-'२९



हम अपने आजके कर्तव्यका पालन करेंगे, तो कलका काम कल खुद ही कर लेगा।

अच्छा काम आप थोड़ा भी करेंगे, तो वह हजारों भाषणोंसे ज्यादा अच्छा माना जायगा।

नव० ७-४-'२९



मेरी ईश्वरसे प्रार्थना है कि वह हम सबको अपने अन्तरमें देखनेकी शक्ति प्रदान करे।

नव० ७-४-'२९



हम लोगोंमें तालीम और व्यवस्थाकी कमी है, सैनिक अनुशासनकी कमी है। हमें नेता या सेनापतिका हुक्म

माननेकी आदत नही पड़ी है । व्यक्तिकी स्वतंत्रताके इस जमानेमें हमने स्वच्छंदताको ही स्वतंत्रता मान लिया है । हिन्दुस्तानका दुःख आज नेताओंके अभावका नहीं है, बल्कि अनेक नेता खड़े हो जानेका है, सैनिकका फर्ज अदा न करनेका है ।

नव० ७-४-'२९



असंगत भाषण या अव्यवस्थित कार्य सहन-शक्ति या स्वार्थत्यागकी शक्तिके द्योतक नहीं हैं । कुरबानीके क्षणिक जोशमें बहकर स्वेच्छासे प्राणोंकी आहुति दे देनेमें बहादुरी जरूर है । लेकिन किसी भी प्रकारकी दलबन्दीमें पड़े बिना अज्ञात रहकर अखंड परिश्रम और अनुशासनका सेवामय जीवन बितानेमें अधिक बहादुरी है । क्षणिक जोशमें आकर की जानेवाली कुरबानियोंकी आज हमें जरूरत नहीं है; हमें जरूरत है नित्य-निरंतर दुःख उठाकर, त्यागमय जीवन बिताकर किये जानेवाले कामोंकी ।

मई, १९२९



जिस गंदगीको राजनीतिके साथ मिला हुआ माना जाता है, उस गंदगीको राजनीतिसे अलग न किया जाय, तो मैं राजनीतिमें रह ही नही सकता ।

मई, १९२९



किसी तंत्र या संस्थाकी जब वार वार निन्दा की जाती है, तो वह निर्लज्ज बन जाती है और फिर सुधरनेके वदले निन्दा करनेवालोंकी निन्दा करने लगती है ।

मई, १९२९



यह बात निश्चित मानना कि सच्चे त्याग और आत्मशुद्धिके बिना स्वराज्य नही मिल सकता ।

सितंबर, १९२९



अछूतकी परिभाषा आप जानते है ? प्राणीके शरीरसे जब प्राण निकल जाते हैं तब वह अछूत बन जाता है । मनुष्य हो या पशु हो, जब प्राणोंके निकल जानेसे वह मुर्दा हो जाता है, तब उसे कोई छूता नही और उसे दफनानेकी या जलानेकी क्रिया की जाती है । लेकिन जब तक मनुष्यमें या अन्य किसी प्राणीमे प्राण रहते है तब तक वह अछूत नही माना जाता । ये प्राण भगवानके अंश हैं । इसलिए किसी भी मनुष्य या प्राणीको प्राण रहते अछूत कहना भगवानके उस अंशका, स्वयं भगवानका तिरस्कार करनेके समान है ।

सित० १९२९



भगवान दूसरोंके दोषोंके लिए किसीको सजा नहीं देता । हरएक मनुष्य अपने ही दोषोंके कारण दुखी होता है ।

सितं० १९२९



तुम लोग ऊंची शिक्षा ग्रहण कर रहे हो, इस कारणसे अपने गरीब भाइयोंको भुला न देना; क्योंकि उनकी पसीनेकी कमाईसे ही तुम्हे यह शिक्षा मिलती है।

सितं० १९२९



तुम चाहे जैसी शिक्षा लो, लेकिन शिक्षा पाकर ऐसे न बन जाना कि गरीब किसानोंमें जाओ तब तुम्हें देखकर वे डरके मारे उसी तरह भाग खड़े हों, जिस तरह उनके बैल मोटरको देखते ही चौककर भाग खड़े होते हैं !

सितं० १९२९



वकील और अदालतके पास जानेके बनिस्वत यमराजके पास जाना ज्यादा अच्छा है । दुनियामें भगवानके नाम पर जितना झूठ अदालतोंमे बोला जाता है उतना और कहीं नहीं बोला जाता होगा ।

सित० १९२९



आपने अपनी स्त्रियोंको गुलाम पशुकी तरह रखा है, इसलिए उनकी सन्तान — आप लोग भी गुलाम पशुओंकी तरह ही जी रहे है ।

मेरा बस चले तो मैं सब बहनोंसे कह दूं कि ऐसे डरपोक और नामर्दोकी पत्नियां बननेके बजाय तुम उन्हें तलाक दे दो !

सितं० १९२९



जो ब्राह्मण गुड्डे-गुड्डियों जैसे बालकों और बालिकाओंका विवाह करनेके लिए स्मृतियों या धर्मग्रन्थोंका हवाला देते हैं, वे ब्राह्मण नहीं बल्कि राक्षस हैं। और जो माता-पिता ऐसे ब्राह्मणोंकी बात मानकर विवाहकी कालीमाताके सामने बच्चोंका भोग चढ़ाते हैं वे स्वयं पशु हैं। कानून मेरे हाथमें हो तो मैं ऐसे लोगोंको गोलीसे उड़ा देनेकी सजा दूं।

नव० २९–१२–'२९



राष्ट्रीय शिक्षाका ध्येय यह है कि उसे पाकर किसानोंके लड़के अपने बापकी विद्याको भूल न जायं और वापिस गांवोंमें ही जाकर रहें।

१२–१–'३०



सच पूछा जाय तो सच्चा सुख सरदार बननेमें नहीं, परंतु सिपाही बननेमें है।

१२–१–'३०



खुद धन पैदा न करके जो दूसरेका धन लेनेमें ही अपनी बुद्धिको चलाता है, वह बुद्धिका व्यभिचार — दुरुपयोग — करता है।

१२–१–'३०



तुलसीदासके कहे अनुसार तुम यदि 'परधन पत्थर मानिये, परस्त्री मात समान' इतना ही सीख लो, तो तुम विद्यापीठके अच्छेसे अच्छे स्नातक बन सकते हो।

१२-१-'३०



तुम अगर एक भी पुस्तक न पढ़ो तो तुम्हारा कुछ बिगड़ेगा नहीं। अगर तुममे चरित्रका विकास हुआ होगा, तो बुद्धिका विकास तो खूब होने ही वाला है। ऐसा भी नहीं है कि पुस्तकें पढ़नेवाले सदा चरित्रवान ही होते हैं। विद्याके विलासी चरित्रकी दृष्टिसे गिरे हुए होते हैं, वे भोग-विलासमे फंसे रहते हैं, ऐसा मेरा अनुभव है।

१२-१-'३०



चरित्र-शुद्धिका काम कठिन है। लेकिन उद्यमी जीवन बितानेवालेके लिए चरित्रसे गिरनेके मौके कम ही आते हैं।

१२-१-'३०



मनुष्योंके हृदयोंको सुन्दर भाषणोंसे नही हिलाया जा सकता; और अगर हिलाया भी जा सके तो पलभरके लिए ही। अगर कोई बड़ा काम हमें करना हो तो हम उसे करके ही बता सकते हैं, केवल बोलकर नहीं।

११-२-'३०



नामर्द और डरपोककी मौत मरनेके बजाय आप बहादुर और आबरूदारकी मौत मरना सीखिये ।

११–२–'३०



जिन्हें मौतका डर हो उनका जीना बेकार है ।

११–२–'३०



सच्चा जेलखाना तो मायाका बंधन है । हमारी आत्माको मोह, माया और काम-क्रोधके बंधन जो लगे हुए हैं वही सच्चा जेलखाना है । जिस मनुष्यने अपनी इच्छासे ये सब बंधन तोड़ दिये हैं, उसे संसारका बलवानसे बलवान साम्राज्य भी बंधनमें बांधकर नहीं रख सकता ।

नव० २९–६–'३०



मौत तो जीवनमें एक ही बार आती है, दो बार नहीं । और वह करोड़पति या गरीब किसीको भी नहीं छोड़ती । तब फिर मौतका डर किसलिए रखा जाय ? मौतका डर छोड़कर हम सब निर्भय और निडर बन जायें ।

नव० २९–६–'३०



यह निश्चित मानिये कि अगर हमारा निश्चय सच्चा है, तो जीत भी हमारे हाथकी ही बात है ।

नव० २९–६–'३०



आप लोग हर जगह अपना सिर न झुकायें। आपका सिर सिर्फ सिरजनहारके सामने ही झुकना चाहिये, और किसीके सामने नहीं। मर्दका सिर तो भगवानके सामने ही झुकता है।

१९३० की लड़ाईके समय



प्राण लेनेका अधिकार तो एकमात्र ईश्वरको ही है।

१९३० की लड़ाई



कौनसा राक्षस सत्यको सदा छिपाकर रख सका है? अंतमें तो सत्य प्रकट होकर ही रहेगा।

१९३० की लड़ाई



गोलीसे हमारे दिलोंको बींधा जा सकेगा, लेकिन ऐसी कोई गोली नहीं बनी है जो हमारी आत्माको बींध सके।

१९३० की लड़ाई



मेरी जबान कुल्हाड़ी जैसी तेज है और मेरी बात आपको कड़वी लगती है। तो भी वह हम दोनोंके हितकी है।

१९३० की लड़ाई



दु:ख ही सुखका मूल है।

१९३० की लड़ाई



हमें व्यापार मुनाफेका नही करना है, परंतु इज्जतका करना है।

१९३० की लड़ाई



हृदयके भीतरकी सच्ची वस्तुको—आत्माको कोई हथियार छू नही सकता।

१९३० की लडाई



मै अपना भविष्य खुद अपने ही हाथमें रखता हूं।

नववर, १९३०



समझदार आदमीको वुरीसे वुरी परिस्थितियोंकी कल्पना करके चलना ही ठीक है।

नव० १९३०

इस दुनियामें प्राण लेना ईश्वरके सिवा और किसीके हाथमें नहीं है।

नवं० १९३०



अगर हम अपनी मर्यादा छोड़ देंगे तो वदनाम हो जायंगे।

नव० १९३०



इतना निश्चित समझ लीजिये कि जो काम आपने हाथमें लिया है, उसमे पीछे कदम हटाना ठीक नहीं होगा। आप थक जायं तब थोड़ी देरके लिए खड़े हो जायं, लेकिन आगे बढ़ाये हुए कदमको पीछे तो कभी न हटायें।

नवं० १९३०



अपने गुस्से और जोशमें हम अपने ध्येयसे विचलित न हो जायं, इसका हमे ध्यान रखना चाहिये।

मार्च, १९३१



हम मनके ओछेपन और ईर्ष्या-द्वेषको छोड़ दें।

मार्च, १९३१



रचनात्मक कार्यमें अधिक समझदार और अधिक अनुभवी लोग होने चाहिये। उसमें विवेक और अनुभवकी आवश्यकता होती है।

नव० ५–७–'३१



देशकी सेवा करनेमें जो मिठास है, वैसी और किसी बातमें नहीं है।

नव० ५–७–'३१



रामनामका जप करनेसे दूसरा सारा दुःख या वियोग हम भूल सकते हैं। इसलिए आनन्दमें दिन बितानेका सुन्दरसे सुन्दर उपाय तो ईश्वर-भजन ही है।

१९–१–'३२



गई-गुजरी बातोंको बार बार याद करके दुखी होनेसे कोई लाभ नही होता। बाकी बचे जीवनको नया जीवन मानकर उसे ही सुधारनेका यथाशक्ति प्रयत्न करना चाहिये।

१६–६–'३३



जागे तभीसे सबेरा मानकर और ईश्वर पर भरोसा रखकर बाकीका जीवन सुधार लिया जाय। और, बाकी बचा हुआ जीवन कुछ कम नही है। उतने जीवनमे तो बहुत काम हो सकता है। इसलिए किसी तरह परेशान न होकर ईश्वरकी शरणमें जाना चाहिये और निष्काम भावसे जितनी सेवा हो सके उतनी सेवा करनी चाहिये; तथा जीवनको मन, वचन और कर्मसे जितना शुद्ध और निर्मल बनाया जा सके उतना बनानेका प्रयत्न करना चाहिये। इतना करोगे तो जीवनमें निराशाके लिए थोड़ा भी स्थान नहीं रहेगा।

१६–६–'३३



पिता कभी मांका स्थान ले ही नही सकता। और सौतेली माके बजाय तो मांका न होना ही अधिक अच्छा है, ऐसा सारी दुनियाका अनुभव है।

१७–७–'३३



संसार मायासे भरा हुआ है । थोड़ी मायाका थोड़ा दु:ख होता है । इसलिए माया और जंजालको बढ़ानेमें कोई लाभ नहीं है ।

१०–१०–'३३



मरना तो एक दिन सभीको है । लेकिन इज्जतकी मौत दो बरस पहले आये तो भी वह स्वागतके योग्य है ।

१–११–'३३



प्रीति तीन प्रकारकी होती है । एक भयकी, दूसरी स्वार्थकी और तीसरी बिना स्वार्थकी ।

१५–११–'३३



जीवनमें जो भी स्थिति आ पड़े उसे आनन्दसे सहन करें, यही हमारा धर्म है ।

२०–११–'३३



हमें स्नेहीजनोंके साथ अन्याय नहीं करना चाहिये ।

२१–११–'३३



हमारे स्नेहियोंमें कोई गलतफहमी पैदा हुई हो, तो उसे मिटानेका प्रयत्न करना हमारा धर्म है, कर्तव्य है ।

२१–११–'३३



जहां भी जाना पड़े वहां हमें 'सबै भूमि गोपालकी' ही भावना रखनी चाहिये। प्रभु जहां भी रखे वहां हमें रहना है; और वह जैसे रखे वैसे ही रहना है। इसलिए हमे सदा आनन्दमें अपने दिन विताने चाहिये।

४–१२–'३३



विश्वासघात भी चोरीसे ज्यादा भयंकर अपराध है।

२–२–'३४



यदि हमारा मन प्रसन्न रहे, तो शरीरको स्वस्थ रखना आसान होता है।

१६–३–'३४



वाहरी दृष्टिसे हमे भले एक-दूसरेसे अलग कर दिया जाये, लेकिन जगतकी कोई भी सत्ता हमारे हृदयोंको अलग नही कर सकती या हमारे स्नेहकी गांठको नही तोड़ सकती।

जनवरी, १९३५



लापरवाहीमे न तो कोई वहादुरी है और न कोई खानदानियत है।

जन० १९३५



बहादुर आदमी अपनी इच्छासे जो कष्ट सहते हैं वही फल देनेवाला हो सकता है; कायर और लाचार आदमी मज़बूरीसे जो कष्ट सहते हैं वह फल देनेवाला नहीं होता। साथ ही, समझ-बूझकर कष्ट सहना चाहिये। वैसे तो भारतमें करोड़ों लोग कष्ट सहते हैं और अज्ञानमें मर जाते हैं। लेकिन उनके ऐसे कष्ट-सहनसे न तो उनका बोझ हलका होता है और न दूसरोंका होता है।

जन० १९३५



मनुष्यके सामने ऐश-आराम और त्याग इन दोमें से किसी एकका चुनाव करनेका मौका आये, तब अगर वह सोच-विचार कर पहलेको छोड़ दे और दूसरेको स्वीकार करे, तो ही कहा जायगा कि उसने बलिदान दिया अथवा तप किया।

जन० १९३५



सच्चा बलिदान सदा दूसरोंके भलेके लिए होता है। उसमें न तो नफा-नुकसानका हिसाब होता है, न किसी बदलेकी आशा रखी जाती है और न किसी तरहकी निराशा या पछतावेके लिए कोई गुंजाइश रहती है।

जन० १९३५



त्याग करनेके बाद अगर आप मनमें उसका स्मरण और रटन किया करेंगे, तो आपका आत्मत्याग बेकार हो जायगा और उसकी सारी शक्ति नष्ट हो जायगी। और

दुनिया आप पर उसी तरह तरस खायेगी और आपको धिक्कारेगी, जिस प्रकार वह उपवास करते हुए भी मनमें अच्छे अच्छे पकवान खानेका ही विचार करनेवाले मनुष्य पर तरस खाती है और उसे धिक्कारती है । ऐसा मनुष्य घृणाका पात्र और ढोंगी माना जाता है और समाजमें उसकी कोई कीमत नही रहती । परन्तु यदि सांसारिक वस्तुओके त्यागके साथ आपके हृदयमे भी त्यागकी भावना पैदा हुई होगी, तो सांसारिक वस्तुओंकी कमी आपको निराश बनाने या आपकी आत्माको कुंठित करनेके बदले आपकी आत्मशुद्धिका साधन बन जायगी और दूसरोंकी सेवाके लिए आपको अधिक योग्य और अधिक शक्तिशाली बनायेगी ।

जन० १९३५



बहुत बार दुःख भोगनेके कारण हममें कड़वाहट आ जाती है, हमारी दृष्टि संकुचित हो जाती है और हम स्वार्थी बन जाते हैं तथा दूसरोकी कमियो और कमजोरियोको सहन नही कर पाते!

जन० १९३५



हमे आजादी जरूर चाहिये। लेकिन आजादी किसलिए चाहिये? क्या सूअरकी तरह कीचड़वाले गड़होंमें लोटनेके लिए? मै आपसे कहता हूं कि अगर हम अपने ग्रामवासियोंको स्वच्छताकी अधिक अच्छी आदते नहीं सिखायेंगे और

वे ढोरोंके गोठानोंकी तरह दिखाई देनेवाले गंदे और भद्दे घरोंमें ही रहा करेंगे, तो स्वराज्य आ जाने पर भी उनकी गरीबी और कंगाली दूर नही होगी ।

जन० १९३५



जो दूसरोंको अपने शोषण पर जीने देते हैं, वे मनुष्य नही लेकिन जानवर है । ऐसी स्थितिसे हमे छूटना चाहिये ।

हरिजनबंधु, ३–३–'३५



मेहनत-मजदूरीमें कभी चोरी नहीं करनी चाहिये ।

हरि० ३–३–'३५



हम गरीब भले ही हों, लेकिन हम दयाके पात्र क्यों बने? दूसरोंके सहारे रहने और जीनेमें हमारी कंगाली जाहिर होती है । हमे तो हर बातमें स्वावलम्बी बनना चाहिये — अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिये ।

हरि० ३–३–'३५



वास्तवमे हमे यह भावना रखनी चाहिये कि मृत्यु मुक्तिका द्वार है । लेकिन दुःखकी बात तो यह है कि हम मोह और मायाको छोड़ नहीं सकते !

११–४–'३५



मैं तो अपने ही हृदयको टटोलनेमे और अपने ही कर्तव्यका विचार करनेमें विश्वास रखता हूं ।

नवंबर, १९३५



हमे अनेक कठिनाइयोंके बीच काम करना है। इसलिए निराश होनेके बदले अपनी कमजोरियां दूर करके हमे आत्म-विश्वास बढ़ाना चाहिये और स्वावलम्बी बननेका दृढ प्रयत्न करना चाहिये । यही हमारे लिए सबसे अच्छा मार्ग है ।

नवं० १९३५



मित्रद्रोह अत्यन्त कष्ट-दायक सिद्ध होता है!

६–३–'३६



ग्रामसेवकको दो बाते जान लेनी जरूरी है: १. बिना कारण बोलना नहीं चाहिये; २. अपने कामकी प्रसिद्धिकी इच्छा नहीं रखनी चाहिये । प्रसिद्धि बहुत बार उसके काममे कठिनाई पैदा कर देती है, जब कि कोनेमे पड़े हुए ग्रामसेवकका काम चमक उठता है ।

हरिजनबंधु, ८–३–'३६



अंतमें लोगों पर छाप तो हमारे चरित्रकी ही पड़नेवाली है । सेवक कितना त्यागी, संयमी, सेवाभावी और धीरज रखनेवाला है, इसीका असर ग्रामजनों पर पड़ता है । अनेक

धूप-छांह, उतार-चढ़ाव, आने पर भी ग्रामसेवक अपने इन गुणोंके कारण लोगोंके हृदयमे स्थान प्राप्त कर ही लेता है ।

हरि० ८-३-'३६

❧

सत्याग्रहकी लड़ाईमें हारनेका तो सवाल ही नहीं उठता ।

मार्च, १९३६

❧

सत्याग्रहकी लड़ाई हमेशा दो तरहकी होती है : १. जुल्मोंके खिलाफ; २. अपनी कमजोरियोंके खिलाफ ।

मार्च, १९३६

❧

सत्याग्रह कोई डरपोक लोगोंका हथियार नही है ।

मार्च, १९३६

❧

सारी दुनियाको पालने-पोसनेवाला किसान असहाय है, कंगाल है, रंक है — ऐसी बातें जब मैं सुनता हूं तब मुझे अपार दुःख होता है ।

मार्च, १९३६

❧

आंखें होते हुए भी अंधे बननेवालेको इस दुनियामें कोई भी सीधे रास्ते नहीं लगा सकता ।

मार्च, १९३६

❧

अगर हमें अपना कल्याण करना हो, तो अपनी कमजोरियोंके खिलाफ हमे घोर लड़ाई लड़नी होगी ।

मार्च, १९३६



सगठनके अभाववाला संख्यावल सच्चा वल नहीं है । सूतके वारीक तार जव अलग अलग होते हैं, तव उनकी वहुत कीमत नहीं होती । लेकिन जव वड़ी संख्यामें मिल-कर वे एक-दूसरेसे मुहब्वत करते हैं, ताने-वानेमें वुने जाकर कपड़ेका रूप ले लेते हैं, तव उनकी मजवूती, उनकी सुन्दरता और उनकी उपयोगिता अनोखी हो जाती है ।

मार्च, १९३६



छोटी छोटी वातोंके लिए आपसमें झगड़े या ईर्षा-द्वेष वढ़ानेके वदले हमे एक-दूसरेके प्रति माया-ममता रखना और एक-दूसरेकी मदद करना सीखना चाहिये ।

मार्च, १९३६



अपनी मर्यादासे वाहर जाकर, कर्ज करके, हमें कभी खर्च नही करना चाहिये ।

मार्च, १९३६



वचपनमे ही लड़के-लड़कियोंकी शादी करके कच्ची उमरमे उन पर घर-गृहस्थीका सारा वोझ लादना अपने वच्चोंकी हत्या करने जैसा है ।

मार्च, १९३६



ऊंच-नीचका भेद माननेवालोंको राज्यसत्ता प्राप्त करनेका अधिकार ही नहीं है। जो दूसरों पर चढ़ाई करता है उसके कंधों पर चढ़ बैठनेवाला कोई न कोई इस दुनियामें निकल ही आता है।

मार्च, १९३६



जो काम कल करनेका है उसकी बात हमें आज नहीं करनी चाहिये। वरना उसकी बातोंमें लगे रहनेसे आजका काम भी पूरा नहीं होगा; और आजके कामके बिना कलका काम भी नहीं हो सकेगा। इसके सिवा, हम अपना आजका फर्ज अदा नहीं कर पायेंगे। इसलिए आजका ही काम हम करें। कलका काम अपने-आप हो जायगा।

मार्च, १९३६



आप विश्वास रखकर आलस्य छोड़ दीजिये, वहमोंको दूर कर दीजिये, डरका त्याग कीजिये, आपसी फूटको मिटा दीजिये, कायरताको अपने भीतरसे निकाल फेंकिये, हिम्मत रखिये, बहादुर बनिये और आत्म-विश्वास रखना सीखिये। इतना करेंगे तो आप जो भी पाना चाहेंगे वह खुद ही आपके पास चला आयेगा। दुनियामें जो मनुष्य जिस वस्तुके लायक होता है, वह वस्तु उसे जरूर मिलती है।

मार्च, १९३६



वालिग उमरके लड़के-लड़कियां अपनी इच्छाके अनुसार विवाह करें, इसमें माता-पिता या सगे-सम्वन्धियोंको रुकावट नहीं डालनी चाहिये । अगर वे रुकावट डालें तो यह उनका अत्याचार माना जायगा । अगर कोई माता-पिता या सगे-सम्वन्धी वालिग उमरके लड़के-लड़कियों पर अपने विचार जवरन् लादें, तो वे अपराधी माने जायंगे ।

३–५–'३६



वहादुर आदमी नए रास्ते वनाते हैं । कायर और डरपोक आदमी समाजके झूठे वन्धनोसे डरकर समाज और परिवारकी अधोगतिमें सहायक वनते हैं ।

३–५–'३६



तलवार चलाना जानते हुए भी जो आदमी तलवारको म्यानमें रखता है, उसीकी अहिंसा सच्ची कही जायगी । कायरोंकी अहिंसाकी तो कीमत ही कितनी होगी ?

२५–६–'३६



आप स्वयं ही अपना उद्धार कर सकते हैं; दूसरा कोई नहीं कर सकता ।

२५–६–'३६



जो आदमी खुद अपनी आबरूको नही बचाता, उसकी आबरूको दूसरा कौन बचा सकता है?

२५–६–'३६



अपनेमें ताकत न हो तो बोलनेसे कोई फायदा नही। गोला-बारूदके बिना केवल पलीता सुलगानेसे ही तोपका धड़ाका नहीं होता।

२५–६–'३६



जितना काम आप करें उसीके जोर पर बोलें।

२५–६–'३६



जनताकी सेवा करनेवाले सेवकोंको ज्यादा सावधान रहना चाहिये। उनसे लोग अधिक शुद्ध जीवनकी आशा रखे, यह स्वाभाविक है।

१४–९–'३६



जो आदमी अपना दोष जानता है और उसे स्वीकार करता है, वह ऊंचा उठता है। जो अपने दोषको समझता नहीं अथवा समझकर भी उसे छिपाता है, वह नीचे गिरता है।

१४–९–'३६



व्यवहार-कुशल मनुष्य अपने आजके कर्तव्यका विचार करेगा, कलका विचार नही करेगा। क्योंकि अगर वह आजकी चिन्ता रखेगा, तो कलका विचार अपने-आप हो जायगा।

१४–१०–'३६



केवल पैसे लुटानेसे कोई उम्मीदवार चुनावमे नही जीत सकेगा। मतपेटी सिक्कों या नोटोसे नही भरी जाती, बल्कि मतपत्रोंसे भरी जाती है।

१४–१०–'३६



आप जिस आदमीको अपना नेता बनायें, उसका विश्वास करना सीखें।

१४–१०–'३६



अगर हम ऊंचे प्रकारका साहस, ऊंचे प्रकारकी शक्ति और ऊंचे प्रकारके बलिदानकी भावना न बतायें, तो हम देशके साथ और हमें मत देनेवाले लोगोंके साथ न्याय नही करेंगे।

१४–१०–'३६



रिश्वत लेकर मत देना महापाप है।

६–११–'३६



जहां पक्की वफादारी ही मुख्य चीज हो, वहां अधिक बातूनी लोगोंकी हमें जरूरत नहीं है ।

६–११–'३६



सिद्धान्तोंकी बलि देकर हमें कुछ भी नहीं करना चाहिये ।

१३–११–'३६



हम एक-दूसरेको जनताकी निगाहमें नीचे गिरानेवाली बातें कहेंगे, तो हमारा बल नष्ट हो जायगा ।

१२–१२–'३६



जहां अपमान होता हो वहांसे आपको हट जाना चाहिये ।

७–३–'३७



देशके करोड़ों लोग जिस तरह रहते हैं, उसी तरह हमारे मन्त्रियोंको भी रहना चाहिये ।

७–९–'३७



एक आदमी दूसरे आदमीको गुलाम बनाकर रखे यह अपराध है । दूसरेको गुलाम बनाकर रखनेवाला तो अपराधी है ही, लेकिन गुलाम बनकर रहनेवाला भी अपराधी है ।

१५–१२–'३७



जो आदमी गुलामीको पसन्द करने लग गये है, उन्हे गुलामीसे छुड़ाना कठिन है ।

जिस पक्षीको बन्द पिंजरेमे रहनेकी आदत पड़ गई है उसे अगर उसका पालनेवाला पिंजरेसे मुक्त कर देता है, तो वह पक्षी बाहर घबराता है और फिरसे पिंजरेमे ही लौट आता है !

१५–१२–'३७



आप जितनी मेहनत करते है उतनी मेहनतका फल भोगना आप जान ले, तो आपके जैसा सुखी दुनियामें दूसरा कोई नही होगा ।

१५–१२–'३७



दुनियामें किसीकी भी तीन आंखे या चार हाथ नहीं होते । भगवानने सभीको दो आखें और दो हाथ दिये है । भगवानने हमे सिरसे पैर तक सुन्दर शरीर तो दिया है, लेकिन अगर उसकी दी हुई बुद्धिका हम उपयोग न करें, तो दोष ईश्वरका नही परन्तु हमारा अपना है । लोग बुद्धिका उपयोग नही करते, आखे होते हुए भी नही देखते, इसीलिए दुखी होते है ।

१५–१२–'३७



अगर देशसे गुलामीको हटाना हो, तो जो सबसे ज्यादा गुलाम हें उन्हे सबसे पहले सुखी बनाना होगा। शरीरमें अगर फोड़ा या नासूर हो जाय तो उसे सबसे पहले काट देना चाहिये। तभी शरीरको सुख मिल सकता है।

१५-१२-'३७



सबसे पहला शिक्षण ही यह है कि आप सभ्यतासे बोलना सीखें।

१५-१२-'३७



जिस सुन्दर मुखसे मीठे वचन और रामका पवित्र नाम बोलना चाहिये, उस मुखमे शराब और ताड़ी डालना महापाप है।

१५-१२-'३७



मेहनत ईश्वरकी मनुष्यको दी हुई बड़ीसे बड़ी शक्ति है। मेहनत-मशक्कत तो मनुष्यकी शोभा है। जो मेहनत करता है वह उत्तम मनुष्य है। जो मनुष्य मेहनत नही करता, परन्तु सिर्फ जवान हिलाकर ही पेट भरता है, वह ईश्वरका चोर है।

१५-१२-'३७



पुरुष और स्त्रीके वीचका विवाह-सम्वन्व पवित्र है और उसमे एक-दूसरेके प्रति जिम्मेदारी अदा करनेका फर्ज समाया हुआ है ।

९–२–'३८



मनुष्यका स्वामी तो एक ईश्वर ही है, जिसने उसे जन्म देकर इस दुनियामे भेजा है । जिसने हमे ऐसा सुन्दर शरीर दिया है और उसमे प्राण डाले है, वही हमारा सच्चा स्वामी हो सकता है ।

मनुष्य जानवरोके स्वामी वन जाते है । लेकिन जव एक मनुष्य दूसरे मनुष्यको अपना गुलाम वनाकर उसका स्वामी वन वैठता है, तव स्वामी वननेवाला और उसे अपना स्वामी स्वीकार करनेवाला दोनो ही पापमे पड़ते है और दोनोंकी हालत बहुत बुरी हो जाती है ।

२१–४–'३८



हमे जल्दीमे कोई कदम नही उठाना चाहिये ।

२१–४–'३८



सत्य और अहिसा ही हमारी सच्ची शक्ति है ।

२२–५–'३८



आपसमें लड़ने-झगड़नेसे हमारी शक्ति नष्ट होती है ।

२२–५–'३८



जो काम प्रेमसे होता है वह वैर और दुश्मनीसे कभी नहीं होता ।

२२–५–'३८



लम्बी-चौड़ी वातें करनेसे क्या लाभ? मेरा तो कम बोलने और अधिक काम करनेमें विश्वास है ।

२२–५–'३८



स्वराज्य आयेगा तब स्त्रियोंका प्रश्न हल हो जायगा, ऐसा मानना गलत है । सच बात तो यह है कि स्त्रियोंका योग्य स्थान हमने छीन लिया है । उन्हें उनके योग्य स्थान पर वैठाया जायगा, तभी भारतमें स्वराज्य आयेगा ।

१५–६–'३८



स्त्रीमे आत्म-विश्वास पैदा हो, वह अपना उचित स्थान प्राप्त करे, यह आवश्यक है । ऐसे सुधार कानूनसे न तो कभी हुए हैं और न आगे कभी होनेवाले हैं ।

१५–६–'३८



यह जगत झूठा है । शरीर क्षणभरमे नष्ट हो जानेवाला है । लक्ष्मी झूठी है, माया है । दुनियाका व्यवहार प्रपंचसे भरा हुआ है । इसमें से तैरकर पार हो जानेमें ईश्वर हमारी सहायता करे, तो अहोभाग्य समझना चाहिये ।

११–७–'३८



कल कोई हमारी मदद करनेवाला है ऐसा सोचकर अगर हम आज बैठे रहे, तो हमारा आज भी बिगड़ेगा; और कलका बिगड़ना तो निश्चित है ही। खुद मरे बिना कभी स्वर्ग नही पहुंचा जाता।

२५-८-'३८



जहां रहकर हमारा गुजर-बसर चलता हो, उस स्थानके प्रति हमें अपना कर्तव्य अदा करना चाहिये। जिस माताके स्तनका दूध हम पीते हों, उस माताके प्रति हमें अपने कर्तव्यका पालन करना चाहिये।

२८-८-'३८



हम बुद्धिके बल पर चाहे जितना धन प्राप्त कर लें, लेकिन कौड़ी भी हमारे साथ नही आती। मनुष्य पैदा होता है तब मुट्ठी बांध कर आता है, लेकिन दुनियासे जाता है तब हाथ पसार कर जाता है। अगर वह दुनियामें कुछ भला काम करके जाता है, तो अपने पीछे मीठी सुगन्ध छोड जाता है। अगर वह गरीब लोगोंकी सहायता करके दुनिया छोड़ता है, तो कोई न कोई उसे याद करते ही हैं।

२८-८-'३८



जगत अनादि कालसे चलता आया है। उसमे हमारे जीवनके पचास पचहत्तर बरस किसी गिनतीमें नही है। लेकिन जो मनुष्य जीवन जीनेकी कला जानता है, वही अपना जन्म सफल बना जाता है।

२८–८–'३८



जो अपनी आंखोंमें किसी तरहका मैल नहीं रखता, जो किसी पर बुरी दृष्टि नही डालता और जो संयमसे जीवन बिताता है, उसकी आत्मा अंतमें ईश्वरमें लीन हो जाती है।

२८–८–'३८



हमे हर काम समझदारीसे करना चाहिये।

२८–८–'३८



राष्ट्रके काममें हमदर्दी बताना ही काफी नही है। उसमे समझ-बूझकर भाग लेना चाहिये।

२८–८–'३८



आपसमे मिल-जुलकर रहेगे तो आप सुखी होंगे।

२८–८–'३८



जिस प्रकार पड़ोसीके मरनेसे हम खुद स्वर्गमें नही जा सकते, उसी प्रकार हमारी स्वतंत्रताकी वात है। अगर हम स्वतंत्रता प्राप्त करना चाहते है, तो हमे अपने पैरों पर खड़ा रहना चाहिये।

गुजरात समाचार, ८-९-'३८



आप दूसरे किसी पर आधार न रखें।

गु० स०, ८-९-'३८



इस दुनियामें सत्ताके पीछे लगा हुआ कोई वड़ेसे वड़ा रोग हो तो वह खुशामद है।

गु० स०, ८-९-'३८



कड़वी होते हुए भी सच्ची वात कहनेमे ही वफादारी है।

गु० स०, ८-९-'३८



कुछ लोग जव भारी वलिदान देते है, तभी लोगोमे जागृति पैदा होती है।

गु० स०, ८-९-'३८



हमारे निश्चयका बल और बलिदान देनेकी हमारी तैयारी — ये दो ही हमारे सच्चे हथियार हैं ।

गु० स०, ८-९-'३८



हमारा ध्येय शुद्ध हो तो हमें अपने दोष सुधारनेका हमेशा प्रयत्न करना चाहिये ।

गु० स०, ८-९-'३८



अगर अपने सम्मानकी रक्षा करके मांगी हुई वस्तु मिले, तो उसे प्राप्त करनेमें कोई हर्ज नहीं है; मैं तो पैरोंमें भी पड़नेको तैयार हूं ।

गु० स०, ८-९-'३८



पानीमे तैरनेवाले ही डूबते हैं और किनारे पर खड़े रहनेवाले कभी नहीं डूबते, यह बात सच है । लेकिन किनारे पर खडे रहनेवाले लोग कभी तैरना भी तो नही सीखते !

गु० स०, ८-९-'३८



दूसरे किसीको दुखी किये बिना हम जितना अधिक दु:ख भोगेंगे, उतनी ही जल्दी हमें सिद्धि मिलेगी ।

गु० स०, ८-९-'३८



आप ऐसा कोई काम कभी न करें, जिससे आपका नाम बदनाम हो ।

गु० स०, ८-९-'३८

ॐ

अनेक लोगोंको सत्ताका चढ़ा हुआ मद छोड़ना अच्छा नही लगता ।

२९-१०-'३८

ॐ

मैंने तो अपने अनुभवसे देखा है कि लोगोंको सीधी और सच्ची बात कहनेकी आदत नही होती। उन्हे खुशामद करनेकी बहुत ज्यादा आदत हो गई है ।

२९-१०-'३८

ॐ

आप खुशामद करना छोड़ दीजिये। खुशामदके जैसा दूसरा कोई जहरीला रोग नहीं है ।

२९-१०-'३८

ॐ

लाठी मारनेवालेको बदलेमें कोई पत्थर मारे, लाठी मारे या गाली दे, तो उसके भीतरका शैतान बिफरता है— भड़क उठता है । लेकिन अगर हम विरोध न करके उसकी मार सहन करते रहें, तो मारनेवालेमें ईश्वरीय भाव पैदा होता है । यही सत्याग्रहका रहस्य है ।

जन्मभूमि, १२-११-'३८

ॐ

मुझ जैसेको तो यह आदत ही पड़ गई है कि एक बार जहां कदम रख दिया वहांसे उसे पीछे न हटाया जाय। जहां कदम रखनेके बाद पीछे लौटना पड़े वहां कदम रखनेकी मुझे आदत ही नही है। अंधेरेमें छलांग मारनेकी आदत मुझमे नहीं है।

२१–११–'३८



जगतमे अगर आपको अपना उद्धार करना हो, तो आप अपने हाथ-पैरों पर भरोसा रखें; मेहनतसे प्रेम करें। जिसके शरीरका विकास होता है, उसके दिमागका भी विकास होता है। केवल बुद्धिका विकास बेकार है। उससे दुनियाको कोई लाभ नहीं होता। बुद्धिके साथ शरीर-श्रमका प्रेम भी बढ़ना चाहिये। उद्यम और विद्या जब एकरस हो जाते है, तब उनमें से अनोखी शक्ति पैदा होती है।

५–१२–'३८



दिमाग और हाथ-पैरके बीच कोई दूरी नहीं होनी चाहिये।

५–१२–'३८



कोई चीज जब बिना मेहनतके मिलती है, तो उसकी कीमत घट जाती है। मेहनतसे मिली हुई चीजकी कीमत पूरी तरह आंकी जाती है।

५–१२–'३८



शुरूमें कठिनाइयां तो आयेंगी ही, लेकिन उनसे आपको घबराना नही चाहिये और न निराश होना चाहिये। आप प्रयत्नसे उन्हें दूर भी कर सकेंगे।

५-१२-'३८



सारी दुनियाके साथ टक्कर लेनी हो, तो दीन और लाचार बननेसे काम नही चलेगा।

५-१२-'३८



आपकी खादी और आपकी पोशाक तो आकर्षक है। लेकिन आपका मन किस हद तक खादीमय बन सका है, यह देखना अभी बाकी है।

५-१२-'३८



आप अपनी शक्तिके अनुसार ही अपनी मर्यादा निश्चित करें।

हरिजनबंधु, ९-१-'३९



जिस आदमीको खुशामद पसन्द होती है, उसे सच्ची बात मीठी भाषामें कही जाय तो भी कड़वी लगती है।

हरि० ९-१-'३९



हिन्दुस्तानके किसी भी कोनेमें अगर गुलामी रहेगी, तो उसकी दुर्गंध सारे देशमे फैलेगी ।

हरि० ९-१-'३९



आजका युग श्रम करके जीनेवालोंका है, बैठे बैठे खानेवालोंका नहीं है । बुद्धिवादका जमाना अब लद गया है ।

हरि० ९-१-'३९



जो मेहनत करता है उसका अधिकार पहले है ।

हरि० ९-१-'३९



सेवाधर्म अति कठिन है; कांटोंकी सेज पर सोने जैसा है ।

हरि० ९-१-'३९



राज्यसत्तामे जितना मोह है, उसमे नीचे गिरनेके जितने खतरे है, उतने ही सेवासे प्राप्त हुई सत्तामें भी हैं ।

हरि० ९-१-'३९



थोड़ासा भी त्याग करनेवालेको हिन्दुस्तानके लोग पूजते हैं । इसीलिए तो यहां लाखों ढोंगी और पाखंडी लोग पूजे जाते है । जिसने भी भगवे कपड़े पहन लिये, उसीको भोलाभाला हिन्दू साधु मान लेता है । लेकिन जितने आदमी भगवे कपड़े पहनते हैं, उतने सब साधु नहीं होते । उसी

तरह केवल सफेद टोपी और सफेद कुर्ता पहन लेनेसे ही कोई गाधीका आदमी नही वन जाता।

हरि० ९-१-'३९



हर प्रजाको अपना राज्य स्वयं चलानेका अधिकार है।

हरि० ९-१-'३९



गुलामी ऐसी चीज है, जो लम्बे समयके वाद मीठी लगने लगती है। गुलामको आजादी अच्छी नही लगती। पिंजरेके पक्षीकी तरह उसके भीतरसे आजादीकी भावना नष्ट हो जाती है। लेकिन जो आदमी गुलामको गुलामीमे जकड़कर रखता है, उसे कलंक — पाप लगता है।

२६-१-'३९



मजदूरको हमें जानवर नही समझना चाहिये।

२६-१-'३९



किसीके पसीनेके पैसे हम डुवायेंगे, तो ईश्वर हमारा बुरा ही करेगा।

२६-१-'३९



नम्रता, श्रद्धा और भक्तिकी साधना हमें करनी ही चाहिये, क्योंकि उसमे विवेक भी समाया हुआ है।

१२–२–'३९



जो मनुष्य सैनिकका फर्ज अदा करना नहीं जानता, वह सेनापति नहीं बन सकता ।

१२–२–'३९



जवानीको जाते देर नहीं लगती । और गई हुई जवानी फिर वापस नहीं आती । जो मनुष्य जवानीके एक एक पलका उपयोग करता है, वह कभी बूढ़ा नहीं होता । सदा जवान बना रहनेकी इच्छावाला मनुष्य मरते दम तक अपने कर्तव्य-पालनमें जुटा रहता है ।

१९–४–'३९



हमारे हाथोंसे बुरा काम कभी होना ही नहीं चाहिये । अपने हृदयको भी हमें अच्छी तरह पहचान लेना चाहिये ।

१६–५–'३९



मैं कायरताका कट्टर शत्रु हूं । कायरोंका साथ करनेके लिए मैं कभी तैयार न होऊंगा ।

१६–५–'३९



राज्य अपने कर्तव्यका पालन करे या न करे, लेकिन हमे तो अपना कर्तव्य पालनेके लिए तैयार रहना ही चाहिये।

१६–५–'३९



मेरी रक्षा ईश्वर कर लेता है।

१६–५–'३९



आपको सदा सावधान और जाग्रत रहना चाहिये।

१६–५–'३९



हमें चार चीजोंकी जरूरत है : हवा, पानी, रोटी और कपड़ा। दो चीजें तो भगवानने हमें मुफ्त दे दी है। अब रहीं दो चीजें। तो रोटी जैसे घरमे बना ली जाती है, वैसे ही कपड़ा भी हमारे घरमें बनना चाहिये।

१६–५–'३९



मनुष्यमे एक चिनगारी पड़ी हुई है। उसे जगतका और जगतके सरजनहारका ज्ञान होना चाहिये। ऐसा ज्ञान हो जाय तो उसे एक मनुष्य ऊंचा और दूसरा नीचा न लगे। जिसने ईश्वरको पहचान लिया है, उसके लिए जगतमें कोई अछूत नही है; उसके लिए ऊंच-नीचके भेद नही है।

१६–५–'३९



जो आदमी दूसरेको अछूत मानता है और उसका तिरस्कार करता है, उसका तिरस्कार करनेवाला जगतमे दूसरा कोई होता ही है ।

१६–५–'३९



भगवान दुखीसे दुखी आदमीमें वास करता है । वह महलोंमे रहने नही जाता ।

१६–५–'३९



हमे अपने घरको साफ रखना चाहिये, गांवको भी साफ रखना चाहिये । जहां गंदगी होती है, वहां ईश्वर कभी नही आता ।

१६–५–'३९



हम भगवानके सामने ही सिर झुकायें; किसी दूसरेके सामने हमे सिर नहीं झुकाना चाहिये । दूसरेके सामने हमारा सिर सदा ऊंचा रहना चाहिये ।

१६–५–'३९



जिसने पाप या चोरी न की हो, उसे डरनेका क्या कारण हो सकता है ? मौत किसीको छोड़ती नही । कोई समय ऐसा भी आता है कि जब हम तो वैठे रहते है और

हमारा नौजवान लड़का चल बसता हैं! यह भगवानकी माया है। जो चीज हमारे नसीबमे लिखी हुई है और जन्मसे ही हमारे साथ जुड़ी हुई हैं उसका डर कैसा? मौतका दिन तो वास्तवमें खुशीका दिन है!

१६–५–'३९



दुनियाके मनुष्य एक-दूसरेको फाड़ खानेका प्रयत्न करते हे। परन्तु हमारे देशमें तो 'अहिंसा परमो धर्मः' कहा गया है। यह सच्ची भावना अगर हममे हो, तो हमारे यहां कोई दुःख-दर्द नही रहना चाहिये।

१६–५–'३९



रात-दिन काम करनेवाला आदमी आसानीसे अपनी इन्द्रियोको जीत लेता है।

१६–५–'३९



दुनिया एक बड़ाभारी विद्यालय है। इस महा-विद्यालयकी डिग्री जल्दी जल्दी नही मिलती।

१२–६–'३९



हर बात जब नई नई शुरू होती है, तब उसका विरोध होता ही है।

१२–६–'३९



वर्धा-योजना केवल चरखा चलानेकी योजना नहीं है। एक जमाना ऐसा था जब भारतके हर गांवमे अपढ़ स्त्रियां चरखा चलाती थीं। चरखेके पीछे मानसिक क्रांति करनेका हेतु है। ऐसी क्रांति न हो तो सब-कुछ भुला दिया जायगा। वहमी आदमीके वहमसे माला फिराते रहने पर भी जैसे उसका फल उसे नहीं मिलता, वैसा ही चरखेके बारेमें भी होगा।

१२–६–'३९



पटेल, पटवारी और शिक्षक तो गांवके आधार-स्तंभ होने चाहिये।

१२–६–'३९



शिक्षकोंको किसी प्रकारका व्यसन नहीं रखना चाहिये। व्यसन धनी लोगोंका पाखंड–ढोंग है; दुर्बल मनुष्योंका लक्षण है। जिसे मिट्टीके मटके नही बनाने है, परन्तु मनुष्योंका निर्माण करना है, उसे किसी तरहका व्यसन नही होना चाहिये।

१२–६–'३९



बालकमें बचपनसे ही मनुष्यताकी भावना जाग्रत हो ऐसा प्रयत्न करना चाहिये।

१२–६–'३९



अगर आपको सदाके लिए जनताके सेवक बनना हो, तो आपको निडर बन जाना चाहिये ।

१४–६–'३९

❀

कैसी भी हालतमें आपके दिलमें डरका प्रवेश नही होना चाहिये । जब मनुष्य भयभीत हो जाता है, तब वह मनुष्य न रहकर पशु बन जाता है ।

१४–६–'३९

❀

हमें अपनी व्यक्तिगत सेवा किसीसे नही करानी चाहिये । जब तक अपने हाथ-पैर चले तब तक दूसरोकी सेवा हमे नही लेनी चाहिये ।

१४–६–'३९

❀

अधिकारीका हुक्म हमे मानना चाहिये । किसी भी हालतमे अपना विनय नहीं छोड़ना चाहिये । किसी समय उनका हुक्म हमे अंतःकरणके विरुद्ध मालूम हो, तो अधिकारीके सामने हमे अपना इस्तीफा पेश कर देना चाहिये. परन्तु विनय नही छोड़ना चाहिये ।

१४–६–'३९

❀

अनुशासनका अर्थ ही यह है कि अपमानजनक मालूम होने पर भी अधिकारीके कड़ेसे कड़े हुक्मका पालन किया जाय और बादमे जो भी कहना हो विनयपूर्वक उनसे कहा जाय ।

१४–६–'३९

❧

अपनी कमजोरियां हमे ही दूर करना चाहिये ।

८–११–'३९

❧

माताका वात्सल्य ही ऐसा है कि उसकी कमी दूसरा कोई पूरी नहीं कर सकता ।

१६–११–'३९

❧

इस दुनियामे अनेक माता-पिता अपने बच्चोंको छोड़कर चले जाते हैं । और अनेक बच्चे अपने माता-पिताको छोड़कर चले जाते हैं। जिसकी बारी आती है उसे जाना पड़ता है । थोड़ेसे समयमे जितना अच्छा काम कर लिया, उतना ही जीवन सफल हुआ माना जायगा ।

१६–११–'३९

❧

मौत किसीको छोड़ती नही । लेकिन जो इस झूठे जगतमे जनताकी सेवा करके जीवनको सफल बना जाता है, उसकी मौत नहीं होती । ऐसे लोगोंके लिए तो मौत मुक्तिका द्वार होती है ।

१६–११–'३९

❧

गरीब मुहल्लोंमें लोगोंकी हालत कैसी है, इसी परसे म्युनिसिपैलिटीके प्रबन्धकी परीक्षा होती है ।

१–१२–'३९

ॐ

जो लोग हिंसाके जोर पर सारी तैयारी करते हैं, उनके दिलमें डरके सिवा दूसरी कोई बात आती ही नही ।

६–१२–'३९

ॐ

मनुष्य जितने सम्मानके योग्य हो उतना ही उसका सम्मान करना चाहिये; उससे अधिक नही । वरना उसके नीचे गिरनेका डर रहता है ।

२०–१–'४०

ॐ

तोप-बन्दूकसे मरना आसान है । लेकिन हम कोई गलती तो नही करते, किसीका बुरा तो हम नही चाहते, इसका रोज विचार करना, इस विषयमे रोज सावधान रहना कठिन है ।

२०–१–'४०

ॐ

इस शरीरको बनानेवाला ईश्वर इसकी मृत्युके लिए समय, स्थान और कारण तीनोंकी पुड़िया बांधकर शरीरमें रख देता है ।

२०–१–'४०

ॐ

यह शरीर पांच महाभूतोंका बना हुआ है । मिट्टी (शरीर) थोड़ी बूढ़ी होती है; लेकिन हमारे भीतरकी चिनगारी तेज बनी रहनी चाहिये । हमें उमरका नहीं, बल्कि कामका विचार करना चाहिये ।

२०–१–'४०



गांवमे जानेवाले सेवककी श्रद्धा चरखेमें अगर ढीली-पोली होगी, तो उसका जीवन बेकार हो जायगा ।

९–५–'४०



जिस तरह किसी इमारतका आधार उसकी नींव पर होता है, उसी तरह हमारी लड़ाईका आधार सैनिकोंके चरित्र पर है ।

७–९–'४०



हम एक-दूसरेके दुःख भले दूर न कर सकें, परन्तु एक-दूसरेसे मिलकर अपना मन तो हलका कर ही सकते हैं ।

७–९–'४०



छोटोंके अधिकारकी रक्षा करनेमें बड़ोंके अधिकारकी रक्षा हो ही जाती है ।

७–९–'४०



जो मनुष्य अपने अधिकारकी अपेक्षा रखता है, उसे अपने कर्तव्यका खयाल रखना चाहिये ।

७-९-'४०



हम आपसमे चाहिये उतना भाईचारा रखें। एक नावमे वैठे हुए मुसाफिर समुद्रके वीच जो मुहब्बत और प्रेम एक-दूसरेके साथ रखते हे, वैसा ही प्रेम और मुहब्बत हम भी आपसमें रखें ।

७-९-'४०



जिसके साथ प्रजा नहीं होती, उसके वुरे हाल होते हे ।

८-९-'४०



सुख और दुःख मनका कारण है । मनुष्य अगर अपने मनको मजवूत वना लेता है, तो उसे दु.खका अनुभव नहीं होता । वह तप करता है । जव उसका तप सच्चा होता है तव सच्चा समय आता है; और उस समय ईश्वर उसका हाथ पकड़े विना नही रहता ।

८-९-'४०



संतको सतानेवाले कभी सुखी नही होते ।

८-९-'४०



संकटमें फंसे हुए आदमीके पास जाकर हमें बैठना चाहिये और उसके सामने अमृतभरी आंखोंसे देखते हुए मीठी मीठी बातें करनी चाहिये । इससे वह अपना दुःख भूल जाता है । ऐसा करना सभी पड़ोसियोंका कर्तव्य है ।

८-९-'४०



पिछले दुःखोंका रोना रोना कायरका काम है ।

८-९-'४०



हमारे पाप ही हमारे दुःखोंके लिए जिम्मेदार हैं ।

८-९-'४०



जगत नाशके मार्ग पर तेजीसे आगे बढ़ रहा है, क्योंकि पापका भार बढ़ गया है ।

८-९-'४०



किसीकी हिंसा नहीं करनी चाहिये । किसीको कष्ट पहुंचे ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिये । लेकिन स्वाभिमानकी रक्षाके लिए हर तरहका कष्ट सहन करना चाहिये ।

९-९-'४०



आज जो शिक्षा दी जाती है वह पोपटके जैसी है । उसमें विद्यार्थीका हृदय और शरीर एकरस नहीं हो पाते;

और न विद्यार्थीके मन या शरीरका विकास होता है। शिक्षा ऐसी होनी चाहिये जिनसे विद्यार्थीके मन, शरीर और आत्मा तीनोंका विकास हो ।

९–९–'४०



अगर घरका वातावरण अनुकूल न हो तो विद्यार्थी शालामे जितना पढ़ेगा, उतना सब घरसे रातको भूलकर शालामें लौटेगा !

९–९–'४०



शिक्षाका उद्देश्य ऐसा होना चाहिये, जिससे शाला और गाव एक-दूसरेकी कमी पूरी करनेवाले बनें, जो इन दोनोको एकरस बना दे ।

९–९–'४०



आपमे जो कमजोरिया और दोप होगे, उनका असर आपके बच्चों पर पड़े बिना नही रहेगा ।

९–९–'४०



हमारे देशके लोगोंमें नागरिकताकी भावना बहुत कम है । पश्चिमकी पशुवृत्तिको हमें नही अपनाना चाहिये । परन्तु पश्चिमके जिस शास्त्रसे हमारी जनताको लाभ हो

उसे जरूर अपनाना चाहिये । पश्चिमने जिस नागरिकताका विकास किया है, उसका अनुकरण हमें करना चाहिये ।

२४–१०–'४०

✓ जो मनुष्य अपनी गलतीसे सबक सीखता है, वह आगे बढ़ता है । वैसे मनुष्य गलती तो करता ही है ।

२३–१–'४२

कमजोर दिखाई देनेवाले मनुष्यकी आत्मा अगर बलवान होगी, तो उसकी आवाज दुनियाके छोर पर भी पहुंच जायगी ।

२३–१–'४२

आलस करनेवालोंके लिए, मौज-शौकमें जीवन बितानेवालोंके लिए स्वराज्य नहीं है । जो मनुष्य अपना पेट भरकर ही सन्तुष्ट नहीं होता, परन्तु अपने गांवमें कोई भूखा न रहे इसका भी ध्यान रखता है, वही स्वराज्य लाता है ।

२६–१–'४२

✓ सूखी रोटी खाकर शांतिसे दिन गुजारना अच्छा है, लेकिन पैसे-टकेसे सुखी होते हुए भी मानसिक दुःख या उद्वेग भोगना बुरा ही माना जायगा ।

११–२–'४२

जौहरी ही हीरेकी कीमत जान सकता है। अगर वन्दरको हीरा दे दिया जाय, तो वह उसे दांतोंसे काटनेका प्रयत्न करेगा और उसके दांत टूट जायंगे!

७–३–'४२



जिस प्रकार जंगलमें आग भड़क उठने पर, या वाढ़का संकट आने पर हम सव एक हो जाते है, उसी तरह आज हमें एक हो जाना चाहिये।

७–३–'४२



अगर हमें उत्तम जीवन विताना हो, तो सवसे पहले हमें इसका विचार करना चाहिये कि जीनेके लिए सवसे जरूरी चीज कौनसी है? वह चीज है हवा। उस पर किसीका अंकुश नही है।

दूसरी चीज है पानी। भगवानकी कुछ ऐसी देन है कि जहां खड्डा खोदें वही पानी निकल आता है। पानी पर भी किसीका अंकुश नही है। एकमात्र भगवानका ही उस पर अंकुश है। भगवानने हमें ऐसी सुन्दर हवा और ऐसा मीठा पानी दिया, इसके लिए हमे उसका उपकार मानना चाहिये।

सूखी-पाखी रोटी मिल जाय तो हिन्दुस्तानके गांवोंके लोग सन्तुष्ट हो जाते हैं। यह अच्छी वात है।

अव वाकी रहते हैं पहननेके कपड़े। तो कपड़ोंके लिए हमें अपने हाथ चलाने चाहिये।

आपको हवा मुफ्त मिलती है, पानी मुफ्त मिलता है। अनाज और कपड़ा आप खुद पैदा कर लीजिये। जरूरतसे ज्यादा कोई चीज काममें लेना ठीक नहीं।

७–३–'४२



मनुष्य स्वयं ही अपने आसपास स्वर्ग या नरक बना सकता है।

७–३–'४२



सुख-दुःख तो केवल कल्पनाकी चीज हैं।

७–३–'४२



अगर आप पर दुःख आयेगा, तो वह आपके भीतरकी कमजोरीके कारण आयेगा।

७–३–'४२



हममें जो दुखी और भूखे हों उन्हे आप काम दीजिये और कोई अपंग हों तो उन्हे खाना दीजिये।

७–३–'४२



हिन्दुस्तानकी स्वतंत्रता इन आंखोंसे देखनेकी मेरी आशा है।

९–३–'४२



जो अंतिम क्षण तक सेवा न करे वह सच्चा सेवक नही है ।

९–३–'४२



जो नौजवानोंको कोई प्रेरणा देकर जाय वही सच्चा सेवक है ।

९–३–'४२



✓जो मनुष्य सम्मान पाने योग्य होता है, वह हर जगह सम्मान प्राप्त करता है । लेकिन अपने जन्मस्थानमे सम्मान पाना कठिन है ।

९–३–'४२



मै जात-पांतको बिलकुल भूल चुका हूं । सारा हिन्दुस्तान मेरा गाव है और सब वर्णोंके लोग मेरे भाईबंद है ।

९–३–'४२



अपने गुणोंका गान करना जरूरी नही है । वे तो अपने-आप बोलते है; छिपानेसे छिपते नही । लेकिन दोष अधिक बलवान होते है ।

९–३–'४२



क्या हम अपने पड़ोसीके छप्परको, पड़ोसीके छप्परके अपनी हदमें बढ़े हुए भागको सहन कर सकते हैं? उसकी वजहसे हमारी आंखोंमें प्रेम उमड़ता है या द्वेष? हमारे अपने ही चचेरे भाईके, अपने सगे भाईके भी, छप्परको अधिक ऊंचा देखकर हमारी आंखोंमें द्वेष–खार भर जाता है। यह हमारी इस धरतीका दोष है! ✓

९–३–'४२



✓ कुलीनता कभी बाप-दादाके देनेसे नहीं मिलती। जो चरित्रवान है, सज्जन है, नीतिवान है, वह चाहे जितने ऊंचे कुलके मनुष्यको भी वशमें कर सकता है। हलका कुल और छोटा कुल, ऊंचा कुल और बड़ा कुल — यह सब आप भूल जाइये।

९–३–'४२



अपने स्वार्थको भूलकर कोई अच्छा काम होता हो, तो उसमें भरसक हाथ बंटानेकी वृत्ति हमें रखनी चाहिये।

९–३–'४२



✓ मनुष्य पैसेसे कुछ नहीं कर सकता।

९–३–'४२



पैसा तो आज है और कल चला जायगा। सट्टेके बाजारमें बहुतसे लोग पैसे गंवा देते हैं। लेकिन सेवाके बाजारमें कभी कुछ गंवाना नही पड़ता।

९–३–'४२



मौतका डर मनसे निकाले बिना बहादुरी नही आयेगी। किसी भी सल्तनतके पास ऐसी बन्दूक या तोपका ऐसा गोला नही है, जो जीवन-डोर न टूटी हो ऐसे आदमीकी जान ले सके। साथ ही, जिसकी जीवन-डोर टूट गई हो उसमें जीव डालनेकी शक्ति भी दुनियामें किसीके पास नहीं है। यह शक्ति आज तक किसीको मिली नही है, और न आगे कभी मिलनेवाली है।

९–३–'४२



हमारे गांवमे कोई नंगा-भूखा हो, तो हमें उसकी रोटी-कपड़ेका इन्तजाम करना चाहिये। क्योंकि पेटका जला सारे गांवको जला सकता है।

१४–३–'४२



आपके पास कोई दुखी आदमी आये तो उसे अपनी शतरंजी पर बैठाइये और आप खुद नीचे जमीन पर बैठिये। तभी आपके जीवनमें सुख आयेगा।

१४–३–'४२



हमारी अहिंसा आज कायरताको ढंकनेका साधन वन गई है !

१४–३–'४२



सेवा किस तरह करनी चाहिये, इसका अनुभव हमे न हो तो हमारी सेवा कुसेवा वन जाती है ।

१५–३–'४२



पहले-पहल आकर आदमी कुरसी पर वैठा और उसे फूलके हार पहनाये गये कि उसमें छिपा घमंड पैदा हो जाता है ।

१५–३–'४२



जनसेवाका काम करनेवाली संस्थाओंमें मतभेद या विचार-भेद हो सकता है । फिर भी जहां महान सिद्धांतका प्रश्न न हो और अन्तरात्माको दवानेका प्रश्न न हो, वहां एक-दूसरेके विचारों या मतोंमें चाहे जैसा तीखा भेद हो, तो भी वहुमतका आदर करके उसके अनुकूल हमें वन जाना चाहिये । हम सव लोग हमेशा एकमत नहीं हो सकते । इसी प्रकार हर समय हम जैसा सोचें वैसा भी हरगिज नहीं हो सकता ।

२९–५–'४२



जो पुण्य और दान हम करेंगे, वही हमारी सच्ची कमाई कहलायेगी। वरना दुनियासे चले जानेके बाद हमारे पीछे कुछ रहनेवाला नही है।

२५–७–'४२



हमारी भारत-भूमिकी एक बड़ी विशेषता है। चाहे जितने उतार-चढ़ाव आयें तो भी पुण्यशाली आत्माये यहां जन्म लेती ही है।

२५–७–'४२



अहिंसाका पालन किये विना दुनियामे जिन्दा नही रहा जा सकता। इसके अभावमें मनुष्य उसी तरह एक-दूसरेको मारने लग जायंगे, जिस तरह जंगलमे वाघ और भेड़िये दूसरे प्राणियोंको मार डालते हैं। और इस सृष्टिका अंत आ जायगा।

२८–७–'४२



विद्यार्थियोंमें झगड़े कभी नही होने चाहिये।

२९–७–'४२



पुण्यशाली मनुष्य कभी नही मरता। राम और कृष्णके नाम आज भी उनके कार्योंसे अमर है।

३०–७–'४२



स्त्रियोंमें जितनी शक्ति होती है उतनी पुरुषोंमे भी नहीं होती। स्त्रियोंकी सहन-शक्तिका कोई पार ही नही है। स्त्रियोंने तो पुरुषोंमे भी शक्ति पैदा की है।

३०-७-'४२



हमें गम खाना सीखना चाहिये। मान-अपमान सहन करनेकी आदत डालनी चाहिये।

४-४-'४३



लोकसेवाका जीवन बितानेवालेका शरीर मजबूत और कष्ट सहनेकी शक्ति रखनेवाला न हो, तो वह बहुत समय तक टिक नहीं सकता।

९-४-'४३



हमें चिन्ता कभी नहीं करनी चाहिये। जितना दुःख भोगना नसीबमें लिखा होगा उतना भोगना ही पड़ेगा।

२५-६-'४३



अन्त तक जिसे अपना धर्म माना है उसका पालन करते करते ही यह शरीर छूट जाये, तो इससे सुन्दर और क्या हो सकता है? ईश्वरको जो पसंद होगा वही होगा। उसकी इच्छाके वश होना यही हमारा धर्म है।

१-७-'४३



जीवनकी डोर तो ईश्वरके हाथमे है, इसलिए चिन्ताकी कोई बात हो ही नही सकती ।

१२–८–'४३

जब तक दूसरोंका सहारा लेनेकी जरूरत न पड़े, तब तक चिन्ताकी कोई बात नही है।

१८–९–'४३

अधिकार मनुष्यको अंधा बना देता है ।

२३–९–'४३

ईश्वर जब तक हमें इस संसारमे रखे तब तक हम अपना कर्तव्य करते रहे और जानेवालोंका शोक न करें। तभी कहा जायगा कि हमने इस क्षणभरमे नष्ट हो जानेवाले संसारका सार समझ लिया है । जब तक हमें जीना है तब तक हमारा शरीर चंगा रहे और हम लोगोंके भलेका काम कर सकें, तो जीवनमें हमे पूरा रस मिलना चाहिये ।

२३–९–'४३

जब तक जीवित रहें तब तक हम अपना कर्तव्य करते रहें, तो उसमे हमें पूरा आनन्द मिलना चाहिये ।

२३–९–'४३

अखिल ब्रह्माण्डमे हमारी क्या बिसात है और हमें किसलिए असंतोष होना चाहिये ?

२३–९–'४३



संसारमें सुख-दुःख तो आते ही रहते हैं। इसलिए समझदार आदमी राग और द्वेषसे सदा परे रहता है।

८–१०–'४३



ईश्वरका नाम ही (रामबाण) दवा है। दूसरी सब दवाये बेकार हैं।

८–१०–'४३



जगतके क्रमको देखकर मनुष्य अहंकारसे ऐसा मानता है कि 'मैं ही सब-कुछ करता हूं।' वैसे 'हुं करुं हुं करुं ए ज अज्ञानता, शकटनो भार जेम श्वान ताणे'[1] इन पंक्तियोंमें जीवनका अपार सत्य भरा हुआ है। ईश्वरका सोचा ही जगतमें होता है। बड़े बड़े महारथी भी केवल उसके साधनमात्र है। और सब अपना अपना पार्ट अदा करके इस दुनियासे चले जाते हैं।

२४–१२–'४३



१. मनुष्य इस दुनियामे अज्ञानवश ऐसा मानता है कि यह काम या वह काम मैं करता हूं; लेकिन उसका यह खयाल वैसा ही है जैसा गाड़ीके नीचे चलनेवाले कुत्तेका यह मानना कि गाडीका भार वही खीच रहा है।

शरीरकी रक्षाका आधार बहुत-कुछ हमारे मन पर रहता है। सुख-दुःखको समान माननेकी आदत हमें डालनी चाहिये और अस्वाद-व्रतका स्मरण करना चाहिये। इससे जीभ मान जाती है और शरीर भी समझ जाता है।

१४-२-'४४

संगति अगर अच्छी हो तो दूसरी सब बातोंको आदमी भूल सकता है।

१४-२-'४४

सबके साथ निभ जानेकी आदत तो हमें डालनी ही चाहिये।

१४-२-'४४

पराधीन मनुष्योंको अपने सम्मानकी रक्षा करके गुलामीमें भी आजादीका उपभोग करना सीख लेना चाहिये।

१४-२-'४४

हम अपने धर्मका पालन करें, तो दुःखसे भरे इस संसारमें सुखी ही होंगे। ईश्वर पर भरोसा रख कर अपने कर्तव्यका पालन करते हुए हमें आनन्दमें अपने दिन बिताने चाहिये। सबसे सुन्दर मार्ग यह है कि हम किसी भी बातकी चिन्ता न करें।

१-३-'४४

शरीरके दुःखसे मनका दुःख ज्यादा बुरा होता है। शरीरको सुधारनेके लिए तो कुछ दवा भी की जा सकती है, लेकिन मनका रोग दवासे नहीं मिट सकता।

१६–३–'४४



बहुत गरम भोजन नही खाना चाहिये। बासी और ठंडा भोजन भी नहीं खाना चाहिये। चाय और आइस-क्रीमका त्याग करना चाहिये। दांतोंकी अच्छी तरह संभाल रखनी चाहिये। दांत अच्छी तरह साफ करने चाहिये। भोजनके बाद मुंहको अच्छी तरह साफ करके दांत साफ करने चाहिये। रातमे सोनेसे पहले दांतोंकी सफाई करनी चाहिये। कपड़े अच्छी तरह साफ-सुथरे रखने चाहिये। शरीरको स्वच्छ रखना चाहिये। ये सब आदते हमारे लिए स्वाभाविक बन जानी चाहिये।

१–४–'४४



कौन आदमी किस समय खतरेमें पड़ जायगा, यह कौन जानता है? यह सब ईश्वरकी माया है, इसलिए उसके भरोसे रहना ही उत्तम मार्ग है।

२२–४–'४४



'जिस समय जो होनेवाला है वह होकर ही रहता है। और वह भी हमारा सोचा या हमारा किया हुआ नही होता। ईश्वरकी इच्छाके बिना एक पत्ता भी नही हिलता। फिर भी झूठा अभिमान करनेवाला मनुष्य 'मै स्वयं करता

हूं' ऐसा मान कर व्यर्थ ही सारे जगतका भार अपने सिर पर लेकर घूमता है और दुःख भोगता है। अतः हमारे लिए उत्तम मार्ग यही है कि जिस समय जो स्थिति आ पड़े उस स्थितिमें हम आनन्दमें रहें।

२२–४–'४४



संगति ऐसे ही लोगोंकी करनी चाहिये, जो भले और चरित्रवान हों।

१०–६–'४४



सच बोलनेका सदा आग्रह रखना चाहिये। गुरु-जनोंसे कोई बात छिपानी नही चाहिये। हर बात उन्हें बता दी जाय, तो गलत काम करनेसे वे हमें रोक सकते हैं।

१०–६–'४४



जीवनमें सब दिन एकसे नहीं जाते।

२४–६–'४४



ईश्वरकी गति अकल और अगम्य है। अतः उत्तम मार्ग यही है कि ईश्वर पर श्रद्धा रख कर हम अपना कर्तव्य करते रहें। और सब बातें बेकार हैं। मनुष्यका सोचा कुछ होता नही।

२९–७–'४४



किसीका भला होता हो तो उससे हमें खुश होना चाहिये ।

२९–७–'४४

❧

धन कमाना नसीबकी बात है। और सन्तोषके अभावमे मनुष्य चाहे जितना धन कमाये, तो भी सन्तुष्ट या सुखी नही होता । इसलिए ईश्वरने सुखसे जो रोटी खानेको दी है, उससे सन्तुष्ट रह कर हमे ईश्वरका आभार मानना चाहिये ।

२९–७–'४४

❧

अपना धर्म पालते हुए जैसी भी स्थिति आ पड़े उसमें हमे सुख मानना सीखना चाहिये ।

१५–९–'४४

❧

मनुष्यका सोचा कुछ नहीं होता, ईश्वरका ही सोचा होता है । ऐसा समझ कर हमे ईश्वर पर भरोसा रखना चाहिये, अपना कर्तव्य करते रहना चाहिये और जिस समय जो हो जाय उसे खुशीसे स्वीकार करना चाहिये ।

१८–१०–'४४

❧

इस दुनियामें हिन्दू विधवाकी जैसी करुण दशा होती है वैसी दूसरे किसीकी नहीं होती । विधवाके लिए लगाये हुए समाजके बन्धन और विधवाके साथ समाजका व्यवहार इतना क्रूर और कठोर होता है कि उसका जीवन कड़ी तपस्या ही बन जाता है!

१–१२–'४४

❧

हमारे पास अच्छे आदमियोंकी बड़ी कमी है। एक आदमी चला जाता है तो उसकी जगह लेनेवाला दूसरा कोई मिलता नहीं।

१३-१२-'४४



कालका चक्र एक क्षणके लिए भी रुकता नहीं; वह नियमित रूपसे चला ही करता है। इस प्रकार वह करोड़ो वर्षोंसे चलता आया है और आगे भी इसी तरह चलता रहेगा। इस बातका विचार करने पर हमें अपनी अल्पताका खयाल होता है। फिर भी यह कैसी विचित्र माया है कि दुनियाके बड़े बड़े आदमी रात-दिन झूठे अभिमानमें फंसकर 'सब कुछ हम ही करते है' ऐसा मानते हैं और भयंकर संहारके कामोंमें रचे-पचे रहते हे!

१३-१२-'४४



समय पर अपने कामका विचार कर लेना ज्यादा अच्छा रहता है। इसके बाद तो ईश्वरकी जैसी इच्छा होती है वैसा हुआ करता है। इसलिए जो हो जाय सो सही। अन्तमें उत्तम मार्ग तो यही है कि जिस समय जो हो जाय उसे खुशीसे सहन करनेके लिए हम सदा तैयार रहें। फिर भी अच्छा यही होगा कि हम सब प्रकारकी परिस्थितिका विचार करके उसका सामना करनेके लिए तैयार रहें।

१३-१२-'४४



संसारमें सुख खोजनेवालेको सुख नहीं मिलता ।

२७-१२-'४४



आज दुनियामें चारों ओर दुःख ही दुःख दिखाई पड़ता है । लेकिन इसमे ईश्वरका जरा भी दोष नही है । मनुष्योंको सन्तोष नहीं है । लोग न तो खुद शांतिसे बैठ सकते है और न दूसरोंको ही शांतिसे बैठने देते हैं । लेकिन अगर सब लोग शांति और सन्तोषसे रहे, तो दुनियामें किसीको भी दुःख न भोगना पड़े ।

२०-१-'४५



मशीन पश्चिमकी यांत्रिक संस्कृतिकी उपज है। उसके प्रवाहमें आज सारी दुनिया बह रही है । हमारा भारत और चीन ये दो देश पुरानी और उससे भिन्न सस्कृतिके उपासक थे । लेकिन वे भी आज यांत्रिक संस्कृतिके प्रवाहमे बह रहे थे । इसलिए समूची दुनिया विनाशके मार्गकी ओर तेजीसे बढ़ रही है । लेकिन हमारे सोचनेसे क्या होता है ? ईश्वरका सोचा ही होगा । हमें ऐसा मान लेना चाहिये कि उसने जो सोचा होगा वह ठीक ही होगा ।

२०-१-'४५



मनको शान्त रख कर हमें प्रसन्नतासे बाहरका (जेलसे रिहा होने पर आनेवाले कामका) बोझ उठानेकी तैयारी रखनी चाहिये ।

२०-१-'४५



स्वास्थ्य यदि अच्छा न रहे तो दुनियामें दुःखका पार नही रहता । आदमी अकेला हो तो चाहे जैसा दु.ख सहन कर सकता है । लेकिन परिवारके साथ रहनेके कारण दूसरोंको भी उसके दु.खसे दुखी होना पड़ता है ।

११–४–'४५



सुख और दुःख इतने ज्यादा घुले-मिले रहते है कि मनुष्यको ऐसा लगता है कि इस संसारमे सुख जैसी कोई चीज वास्तवमे है ही नही । सच बात तो यह है कि ईश्वर जिस स्थितिमें हमे रखे उसीमें सुख मानना चाहिये और अपना फर्ज अदा करना चाहिये ।

११–५–'४५



हमें सबके साथ हिल-मिल कर रहना सीखना चाहिये । सबके स्वभाव एकसे नही होते; और हमारा स्वभाव दूसरोंको पसन्द न हो, तो भी हमें प्रयत्न करके सबके साथ मेल साधना चाहिये ।

२३–५–'४५



मुझे अंग्रेजों पर गुस्सा नहीं आता । मुझे गुस्सा आता है हिन्दुस्तानियोंकी कायरता पर । मेरा दूसरा गुस्सा है अंग्रेजोके साम्राज्यवाद पर और तीसरा गुस्सा है यूरोपियनोके घमंड पर ।

३०–१०–'४५



आप दूसरोंको मारेंगे तो उसके साथ अपने विनाशको भी न्योता देंगे ।

३०–१०–'४५



दुनिया जब तक अहिंसाको स्वीकार नहीं करेगी, तब तक दुनियामें शांति कायम नहीं होगी ।

३०–१०–'४५



विदेशी भाषाके माध्यम द्वारा शिक्षा देनेकी आजकी पद्धतिसे हमारे नौजवानोंकी बुद्धिके विकासमें बड़ी रुकावट पैदा होती है ।

शिक्षा जब परायी भाषामें दी जाती है तब विद्यार्थियोंके दिमाग पर सिर्फ उस भाषाके शब्द याद रखनेका ही बोझ नहीं पड़ता, परन्तु विषयको समझनेमें भी उन्हें बड़ी कठिनाई होती है । यह तो साफ बात है कि जहां रटनेकी शक्ति बढ़ती है, वहां समझनेकी शक्ति घट जाती है ।

३०–११–'४६



कठिनाई सामने दिखाई पड़ी कि हाथ-पैर समेट कर बैठ जाना और उसे दूर करनेकी कोई कोशिश न करना, यह निरी कायरता है । पुरुषार्थ कठिनाइयोंका सामना करके उन्हें पार करनेमें है ।

३०–११–'४६



जहां कोई भी काम पूरा करनेकी इच्छा और दृढ संकल्प होता है, वहां कोई न कोई रास्ता या उपाय कहींसे मिल ही जाता है ।

३०–११–'४६



गांधीजीके लिए हमारे मनमे पूज्य भाव तो खूब है, लेकिन उनके पीछे चलनेकी जितनी वृत्ति होनी चाहिये उतनी हममे नही है ।

३०–१२–'४६



हम अपने घरकी अच्छी तरह संभाल करेंगे, तो स्वराज्य हमारे हाथमे ही है ।

३०–१२–'४६



जानवर भी संकटमे आ पड़ता है, तब सीग उठा कर उसका सामना करता है । तब मनुष्य अपनी बहन-बेटियो पर संकट आने पर भाग जाय, यह तो जानवरसे भी बदतर कहा जायगा । हमे अपने भीतरसे कायरताको निकाल कर फेंक देना चाहिये ।

३०–१२–'४६



शिक्षक विद्यार्थियोंको शिक्षा भले ही कम दे; लेकिन अगर उसके चरित्रका प्रभाव विद्यार्थियों पर पड़ता हो, तो वह बहुत काम कर सकता है ।

४–४–'४७



शिक्षकको अपना जीवन अधिकसे अधिक निर्मल बनाना चाहिये ।

४-४-'४७

आदमी पैसा कमाना तो जानता है, लेकिन कमाईका अच्छा उपयोग कैसे किया जाय इसका खयाल सबको नही होता ।

४-४-'४७

व्यक्तियोंका जीवन ऊंचा हो तो ही समाजका जीवन ऊंचा उठता है ।

४-४-'४७

संस्था तभी शोभा पाती है जब उसके पीछे रही भावनाको हम अपने आचरणमें उतार कर दिखा दें ।

४-४-'४७

स्वतंत्र भारत अधिक सुखी हो, सारी दुनियाको शांतिका सन्देश दे, तभी उसका स्वतंत्र होना सार्थक कहा जायगा ।

६-४-'४७

भारतके स्वतत्र हो जानेके वाद भी अगर गुलामीकी वदवू आती रहे, तो स्वतंत्रताकी सुगंध नहीं फैल सकती ।

६-४-'४७

जो सेवा करता है और जो चरित्रवान है, वही सच्चा कुलीन है ।

६–४–'४७

ॐ

अगर हम अच्छे आदमियोंका समूह पैदा न करे, तो अपनी संस्थाको अच्छी तरह नही चला सकेंगे ।

७–४–'४७

ॐ

स्वराज्यका अर्थ है अपने बल पर खड़े होना; किसी पर अधार न रखना; पड़ोसी भूखों मरता हो तो अपनी रोटीमें से आधी रोटी उसे खिलाना ।

७–४–'४७

ॐ

शालाओंमे या कॉलेजोमे पढ़नेवाली विद्यार्थिनियोंको मौजशौककी नही किन्तु मेहनत करनेकी आदत डालनी चाहिये।

विद्यार्थियोमे भी यह दोष आ गया है । वे मानते है कि मेहनत करना नौकर-चाकरका, गंवार आदमीका काम है । पर यह बड़ी गलत बात है । हाथ-पैर चलानेमे ही मनुष्यकी सच्ची शोभा है ।

हम मजदूरोंकी तरह नही, परन्तु समझ-बूझकर मेहनत करें । उसके साथ हममे अच्छे सस्कार आने चाहिये, अच्छे विचार आने चाहिये और मधुमक्खी जिस तरह फूलमें से सारी मिठास खीच लेती है, उसी तरह दुनियामें जहां जहां अच्छी चीज हो वहांसे उसे खीच लेनेकी

शक्ति हममें आनी चाहिये । मैले पर बैठनेवाली मक्खीको फूल पर बैठाया जाय तो भी वह फूलकी सुगंध नही लेगी, बल्कि वहां गंदगी ही करेगी; लेकिन मधुमक्खी जहां शहद मिल सकता है वहांसे शहद ही लेगी । हमें भी ऐसा ही करना चाहिये ।

७–४–'४७



आज सच्ची जरूरत जनताकी नीतिको ऊंचा उठानेकी है । आजकल दुनियामें हर जगह रिश्वतखोरी और पाखंड बढ गया है । जहां जनताका चरित्र ऊंचा है, उसका नैतिक बल ऊचा है, वहां ये दोनों दोष कम दिखाई देते हैं ।

७–४–'४७



आदमीको मकान नहीं बनाता, परन्तु चरित्र बनाता है ।

१६–४–'४७



गरीबीमें मनुष्यका जीवन जैसा बनता है, वैसा अमीरीमे नहीं बनता ।

१६–४–'४७



सेवा करनेवाले आदमीको नम्रता खूब सीखनी चाहिये ।

१८–४–'४७



लम्बे समय तक रोगशय्या पर पड़े रहनेके बाद जब रोग मिट जाता है और भूख खुलती है, तब परहेज पालना जरूरी होता है । अगर परहेज न पाला जाय तो भयंकर

रोग हो सकता है। इसी तरह स्वतंत्रताके साथ हमें परहेज, संयम पालना चाहिये। लेकिन आज तो सब यही चाहते हैं कि हमारी कौमके या हमारी पार्टीके हाथमें सत्ता आनी चाहिये!

११–५–'४७



हम स्वतंत्र हो गये हैं, सत्ता हमारे हाथमें आई है; इसलिए आरंभमें उसका दुरुपयोग होनेकी पूरी सभावना है। लेकिन आशा है कि आखिरमें सब-कुछ ठीक हो जायगा।

२१–९–'४८



दुःखकी बात है कि देशके नौजवान लोग काम करनेके बदले या जिम्मेदारी उठानेके बदले झूठे अभिमानके शिकार होकर गलत रास्ते लग गये हैं!

२५–९–'४८



आज तो अब अधिक एकत्र और अधिक संगठित होकर भारतका निर्माण करनेका समय आया है। हम जैसा उसका निर्माण करेंगे वैसा ही वह बनेगा।

२५–९–'४८



अब हम चुपचाप, कम बोल कर ज्यादा काम करें तो बहुत अच्छा हो। लेकिन आज बहुत बोलनेवाले और काम बिलकुल न करनेवाले हमारे नौजवान उलटे रास्ते लगे हुए हैं।

२५–९–'४८



किसी तरहके प्रपंचोंमें पड़े विना गरीवोंकी सेवाका लाभ मिलनेसे जो आनन्द हो सकता है, वह आनन्द दूसरे कामोंमे नही मिल सकता ।

२५–९–'४८



(भारतमें) निस्स्वार्थ सेवा करनेवालेके लिए विशाल क्षेत्र खुला पड़ा है ।

२५–९–'४८



स्वार्थ और सेवा दोनों साथ साथ नही चल सकते। दोनोंका मेल नही हो सकता ।

२५–९–'४८



हम राष्ट्रकी एकता कायम नही रख सकते । अभी प्रान्तवाद, कौमवाद, जात-पांतकी दीवारें वगैरा अनेक बन्धन तोड़ने बाकी हैं । इन्हें हमें तोड़ना ही होगा ।

अगस्त, १९५०



हम सव लोगोंको अपने साथ लेकर चलें, तो ही यह महत्त्वका काम पूरा कर सकेंगे ।

अगस्त, १९५०



हमारी कुछ विचारप्रेरक पुस्तकें

अहिंसक समाजवादकी ओर	१.००
आरोग्यकी कुंजी	०.४४
खादी क्यों और कैसे ?	२.००
गांवोंकी मददमें	०.४०
गीताबोध	० ५०
नई तालीमकी ओर	१.००
पंचायत राज	०.३०
बापूकी कलमसे	२.५०
बापूके पत्र — ५ कुमारी प्रेमाबहन कंटकके नाम	४ ००
बुनियादी शिक्षा	१.५०
मंगल-प्रभात	०.३७
मेरा धर्म	२ ००
मेरे सपनोंका भारत	२ ५०
मोहन-माला	१.२५
रामनाम	०.५०
विद्यार्थियोंसे	२ ००
विश्वशांतिका अहिंसक मार्ग	०.४०
सत्यके प्रयोग अथवा आत्मकथा	१.५०
सत्य ही ईश्वर है	० ८०
सर्वोदय	२ ००
स्त्रियां और उनकी समस्यायें	१.००
हमारे गांवोंका पुनर्निर्माण	१.५०
विचार-दर्शन — १	१.५०
विचार-दर्शन — २	१.५०
विवेक और साधना	४.००

महादेवभाईकी डायरी — भाग १	५ ००
महादेवभाईकी डायरी — भाग २	५ ००
महादेवभाईकी डायरी — भाग ३	६ ००
जीवन-लीला	३ ००
सूर्योदयका देश	२ ५०
गाधी और साम्यवाद	१ २५
गीता-मंथन	३ ००
जडमूलसे क्राति	१ ५०
तालीमकी बुनियादें	२ ००
शिक्षाका विकास	१ २५
शिक्षामे विवेक	१ ५०
ससार और धर्म	२ ५०
स्त्री-पुरुष-मर्यादा	१.७५
एकला चलो रे	२ ००
बिहारकी कौमी आगमें	३ ००
ग्रामसेवाके दस कार्यक्रम	१ २५
आशाका एकमात्र मार्ग	२ ००
ऐसे थे बापू	१.७५
गाधीजी और गुरुदेव	० ८०
गाधीजीकी साधना	३.००
ठक्करबापा (जीवन-चरित्र)	३.००
बापूकी छायामे	४ ००
राजा राममोहनरायसे गाधीजी	२.००

डाकखर्च अलग

नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद—१४